ISBN-978-93-5592-300-4

चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी का शैक्षिक योगदान



- डॉ. अनीता शर्मा
- दिव्यानी सक्सेना

चंद्रिका प्रसाद सक्सेना
'कीर्ति' जी का शैक्षिक योगदान

डॉ० अनीता शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

दिव्यानी सक्सेना

एम.ए.(अंग्रेजी), बी.एड., एम.एड.

चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी

का शैक्षिक योगदान

डॉ० अनीता शर्मा

दिव्यानी सक्सेना

E-book संस्करण: 2025

मूल्य: ₹ 49

ISBN:978-93-5592-300-4

प्रकाशक

दिव्यानी सक्सेना

तुलसी नगर, उरई

जिला, जालौन (उत्तर प्रदेश)

पिन कोड — 285001

मो.— 7392088689

ई-मेल:manshisrivastav01@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान मानव है कोई भी राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए समर्थ हो। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील और सक्रिय प्राणी माना जाता है अपनी मानसिक क्षमता चिंतन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्मांड की परिधि को लांघा है। वरन अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का विकास करते हुए आनंददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परंतु मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

आधुनिक युग में रचना करने के उद्देश्यों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है,इस परिवर्तन का आधार विश्व में विकसित नवीन मूल्य जैसे लोकतंत्र, समता, भ्रातृत्व और चराचर के प्रति मानवी प्रेम जिसे एक शब्द में मानवता कह सकते हैं। उक्त मानवी मूल्यों को लोक जीवन में स्थापित करने हेतु कवि ने कविता को एक साधन के रूप में चुना है और अपने काम में शैक्षिक मूल्यों का विविध रूप से यथार्थ चित्रण किया है। जिससे लोक संवेदनाओं का महत्व और शैक्षिक मूल्य की स्थापना होती है। कवि कीर्ति जी के काव्य में वे सभी गुण मौजूद हैं,जो एक श्रेष्ठ शैक्षिक मूल्य में होने चाहिए। अतः कवि की काव्य रचनाओं में शैक्षिक मूल्यों के साहित्य से जोड़कर देखने का प्रयास ही इस शोध प्रस्तुत का अभीष्ट है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी का शैक्षिक योगदान। इस पुस्तक को **छः अध्याय** में विभाजित किया गया है–

प्रथम अध्याय– इस अध्याय में शिक्षा विकास की प्रक्रिया,वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएं शिक्षा का व्यवसायीकरण, शिक्षा का राजनीतिकरण, शिक्षा की अपेक्षा, समस्या का प्रादुर्भाव, अध्ययन की आवश्यकता, समस्या कथन, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन विधि और अध्ययन के महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय– द्वितीय अध्याय में शोध से संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है। जिसके अंतर्गत अध्ययन से संबंधित कतिपय शोध कार्यों की समीक्षा एवं निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय– इस अध्याय के अंतर्गत कीर्ति जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर रोशनी डालने का प्रयास किया गया है। जिसमें कवि के जन्म स्थान, बाल्य जीवन की विस्तार से चर्चा की गई है। गृहस्थ जीवन हमेशा चुनौती और संघर्षों से भरा होता है कीर्ति जी भी इससे बच नहीं सके। इसमें कीर्ति जी की वंश परंपरा, अध्ययन यात्रा, अध्यापन यात्रा का भी वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय– इस अध्याय में चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी की साहित्य सर्जना का उल्लेख किया गया है। जिसके अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय– यह अध्याय कीर्ति जी की चयनित कविताओं में निहित शैक्षिक मूल्यों पर आधारित है। जिसमें उनकी **'राही ! चल चल अभी दूर है', 'होरी गीत', 'भारत मां की लोरी', 'हिंदी दुर्दशा', 'छात्र युवा शक्ति से', 'अस्तित्व मिटाकर जीना मुझको स्वीकार नहीं', 'कैसे अपनी हार मान लूं?'** जैसी कविताओं की प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा की गई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इन कविताओं के सामाजिक निहितार्थ कितने गहरे और व्यापक हैं।

षष्ठ अध्याय– इस अध्याय में निष्कर्ष एवं सुझावों का विस्तार से अध्ययन किया गया है। साथ ही शैक्षिक निहितार्थ एवं भावी शोध कार्यों के लिए सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबंध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य सोद्देश्य होता है और शोध कार्य के परिणामों के उचित क्रियान्वयन पर ही यह उद्देश्य सार्थक हो सकता है इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने की नितान्त आवश्यकता होती है एक मनुष्य के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य की पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धि जीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसंधान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही जनमानस में चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी के शैक्षिक योगदान की शैक्षिक उपादेयता पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होगी।

- डॉ. अनीता शर्मा
- दिव्यानी सक्सेना

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: एक विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ज्ञान तकनीकी दक्षता उचित आचरण विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं। इस प्रकार यह कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक उत्कर्ष पर केंद्रित है। शिक्षा समाज में एक पीढ़ी द्वारा अपने से निकली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों,व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समझ से तभी जुड़ पता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है। शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है।

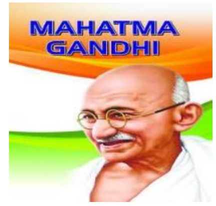
भारत एक ऐसा देश है जो धर्म एवं अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शन करता रहा है। हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति तथा आदर्शों एवं परंपराओं का ही प्रभाव था कि संपूर्ण विश्व में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रचार हुआ। यहां यह स्वाभाविक है कि ऐसी उत्कृष्ट संस्कृति व्यवस्था स्थापित करना और आदर्शों एवं परंपराओं को निर्धारित करना कैसे संभव हो सका, तो इस प्रश्न का उत्तर है अद्वितीय शिक्षा व्यवस्था।

उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था के द्वारा भावी पीढ़ी का उच्च आदर्शों, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परंपराओं और सांस्कृतिक संपत्ति को इस प्रकार हस्तांतरित किया जाता है कि व्यक्ति के हृदय में सद्भाव तथा त्याग की भावना प्रज्ज्वलित हो जाती है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। शिक्ष का अर्थ है सीखना और सिखाना। शिक्षा शब्द का अर्थ हुआ सीखने-सिखाने की क्रिया। जब हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हैं, तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है: व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में। व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सौद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि, एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण-क्षण प्रशिक्षण नए-नए अनुभव प्राप्त करता है वा करवाता है, जिससे उसका दिन-प्रतिदिन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना-सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते हैं। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थान में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सौद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा छात्र निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर अनेक परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

समाज शास्त्रियों मनोवैज्ञानिकों व नीति कारों ने शिक्षा के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं शिक्षा के अर्थ को समझने में यह विचार भी हमारी सहायता करते हैं। कुछ शिक्षा संबंधी मुख्य विचार यहां पर किए जा रहे हैं।

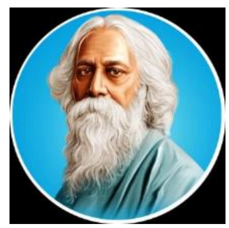
- "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।" **(महात्मा गांधी जी)**



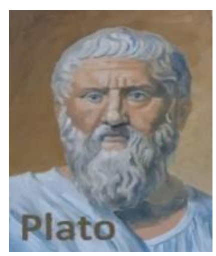
- "मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को स्थापित करना ही शिक्षा है"। **(स्वामी विवेकानन्द)"**



- "सर्वोच्च शिक्षा केवल हमें सूचनाओं नहीं देती,वरन हमारे जीवन व सृष्टि के बीच तादात्म्य स्थापित करती हैं"। **(रवींद्रनाथ टैगोर)**



- "शिक्षा का कार्य मानव के शरीर व आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करना है जिसके वे योग्य हैं"। **(प्लेटो)**



आज की शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन नहीं माना जा रहा है, परंतु शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती है, तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती। आज भारत में पहले सामाजिक बुराइयों,

नैतिकता का हर्ष, अनुशासनहीनता, मूल्य का हर आदि समस्याओं का हाल हमारी व्यवस्था में सुधार लाकर ही किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाना होगा या भारतीय विद्वानों, की शिक्षाविदों के शैक्षिक विचार एवं प्राचीन साहित्य में वर्णित शैक्षिक विचारों का अध्ययन कर कुछ धर्म गुरुओं एवं समाज सुधारकों द्वारा किए गए शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन कर उसके आधार पर एक नई शिक्षा प्रणाली स्थापित करने पर ही संभव है। शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है। शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक सीमित नहीं है अपितु उनका चरित्र विकास भी करती है। संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षा अधिक होता क्योंकि मानव विकास विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुपत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे सामाजिक प्राणी बनाया जा सकता है। सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, समाज तथा समुदाय की सहायता करते हैं शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है।

1.2 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएं

1.2.1 शिक्षा का व्यवसायीकरण

माध्यमिक शिक्षा के व्यवसाय कारण को लेकर भारत सरकार ने कई आयोग का गठन ही नहीं किया है। अभी तो उनकी सलाह पर कार्य किया गया है, परंतु फिर भी स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ। इसके संबंध में कोठारी आयोग 1964 ने कहा है कि बार-बार सलाह देने के पश्चात भी दूर भाग की बात यह है कि विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा को एक घटिया किस्म की शिक्षा समझा जाता है और अभिभावक तथा विद्यार्थियों का सबसे आखिरी चुनाव होता है। शिक्षा का व्यवसाय कारण का समान शब्दों

में अर्थ होता है किसी व्यावसायिक में प्रशिक्षण, अर्थात विद्यार्थी को एक व्यवसाय सिखाना ताकि वह अपने जीवन यापन स्वतंत्रता से कर सके। शिक्षा के साथ उन कोषों की व्यवस्था की जाए जो छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ किसी व्यवसाय में भी कुशल व्यक्ति बनाएं।

1.2.2 शिक्षा का राजनीतिकरण

अधिकांश लोगों को असर होता है कि स्कूलों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाना क्यों आवश्यक है क्या आप अपने आप को एक ऐसे प्रदेश में पाए हैं जहां राजनीतिक और शिक्षा के बीच में संबंधों के संबंध में एक पराजय होती है? बराक ओबामा को आदर्श उदाहरण के रूप में उपयोग करने में संकोच न करें। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति को आधुनिक युग के महानतम नेताओं में से एक माना जाता है और उनके अनुकरणीय नेतृत्व की शैली सबसे शानदार घटनाओं में से एक है। जैसे कई लोग सीखना चाहते हैं, इसलिए उन्हें तत्व की स्थिति कैसे मिली, इस पर विचार करना चाहिए। इसलिए राजनीतिक और शिक्षा को एक साथ लाने वाले अधिक सत्रों को एकीकृत करने की आवश्यकता को खारिज करने के लिए सबसे अच्छा उदाहरण के रूप में पर्याप्त होना चाहिए। शिक्षा की प्राथमिक भूमिका एक छात्रा के पढ़ने, समझ और ज्ञान में सुधार के माध्यम से शिक्षित करना ही है, अशिक्षित नेताओं द्वारा शिक्षित दुनिया की कल्पना निराधार है। यह प्रशंसनी नहीं लगता है इसलिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि स्मार्ट होना प्रभावी नेतृत्व के बारे में बहुत कुछ नहीं दर्शाता, लेकिन फिर भी कई घटनाओं में से एक के रूप में मदद करता है जो एक महान नेता बनने के लिए आवश्यक है शिक्षा किसी की सोच को कहीं अधिक विस्तृत करती है हालांकि हमें स्कूलों में अधिक राजनीति शुरू करने में सावधानी बरतनी चाहिए। शिक्षा प्रणाली को वामपंथी झुकाव के लिए जाना जाता है। विश्वविद्यालय को और अधिक लेकर नवीनतम आम चुनाव में वामपंथी दलों के पक्ष में पूर्वाग्रह अधिक था। हमें यह सुनिश्चित

करना चाहिए कि हमारे भविष्य के नेताओं और राजनेताओं को राजनीति सीखते समय ही हम कुछ हद तक ध्यान रख रखते हैं जाहिर है कि हम पूर्वाग्रह और रुकावट को समाप्त नहीं कर सकते, लेकिन हम लेबर पार्टी या लिबडेम्स के विचारों के बजाय एक संतुलित राजनीतिक शिक्षा को प्रोत्साहित कर सकते हैं। दूसरा जनमत संग्रह दल या मार्क्सवादी समाज हमारे बच्चों को मार्क्सवाद से लेकर फासीवाद तक, और साथ ही बीच में सब कुछ, राजनीतिक स्पेक्ट्रम की चरण सीमाओं से अवगत कराया जाना चाहिए। और यह सर्वोपरि होना चाहिए कि बच्चों को सूचना के अंतराल को समझने और अपना मन बनाने में सक्षम होना चाहिए।

राजनीति और शिक्षा दो ऐसे क्षेत्र हैं, जो सीखने पर केंद्रित सामान विषयों पर निर्भर करते हैं। इसका तथ्य है कि हर शिक्षक कभी छात्र था हर नेता कभी प्रशिक्षु नेता था हालांकि एक बात स्थिर रहती है कि ज्ञान सर्वोपरि है इन घटनाओं को यह बताने के लिए आवश्यक उदाहरण होना चाहिए राजनीति और शिक्षा में हमेशा एक सहजीवी बंधन रहेगा।

1.2.3 शिक्षा व्यवस्था में क्षरण को पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक शिक्षक भी जिम्मेदार है जिसमें शिक्षकों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अपने-अपने विचार दिए हैं पुरातन गुरु शिष्य परंपरा हमारी देशी शिक्षा पद्धति थी। जिसमें छात्र अनुशासन में रह कर गुरु का सम्मान करते थे। शिक्षा पाते थे परंतु अब ऐसी स्थिति नहीं है शिक्षा का बाजारीकरण हो गया। जिसका कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली क्षरण की ओर है। इस पर ध्यान नहीं देते। अभिभावक भी हमें शिक्षकों के पास भेज तो देते हैं लेकिन कुछ भी जानने का प्रयास नहीं करते हैं। पश्चिमी शिक्षा पद्धति ने हमारी संस्कृति पर घात किया है। इस पर हम सभी को गहन चिंतन के साथ राजनीतिक को भी गंभीरता से शिक्षा व्यवस्था में

बदलाव करना होगा। वर्तमान में शिक्षक छात्र संबंधों में कमी आई है। यह एक औपचारिकता के स्तर पर आ गया है। छात्रों में सम्मान देने की भावना में कमी आई है। इसमें छात्र ही दोषी नहीं है। बहुत हद तक शिक्षक भी जिम्मेदार है देखने में आ रहा है कि बहुत जगह शिक्षक इस सम्मान का गलत फायदा उठाते हैं। पूर्व में गुरु शिष्य संबंध में स्वार्थ था। वर्तमान में यह स्वास्थ्य परक हो गया है पैसा कमाने की सारी हदें शिक्षक पर कर चुके हैं जिस कारण यह क्षरण देखने को मिल रहा है। समय आ गया है कि अभिभावक गुरु छात्र चिंतन करें। पश्चात शिक्षा पद्धति भी इस क्षरण के लिए जिम्मेदार है। इसे पुनः प्रतिस्थापित करने के लिए एक प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करना पड़ेगा। प्राचीन गुरू शिष्य परंपरा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के ढेर सारे कारण हैं। सरकारी शिक्षा व्यवस्था का क्षरण होने के साथ ही निजी कोचिंग कक्षाएं व निजी स्कूल इसके पतन का कारण बना है। सरकारी विद्यालय में ना तो मजबूत आधारभूत संरचना है ना ही योग्य शिक्षक है जिससे शिक्षा का बाजारीकरण होते चला गया है जो अब चरम पर है। इस समांतर शिक्षा प्रणाली में पैसा कमाना मुख्य ध्येय रह गया है।

1.2.4 शिक्षा की उपेक्षा

शिक्षा किसी भी प्रदेश के विकास की रीढ़ होती है। प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नींव की तरह है। यदि नींव ही कमजोर हो गई तो मजबूत भवन की उम्मीद बेमानी हो जाती है स्कूलों में आधारभूत ढांचे से लेकर अध्यापकों तक का अभाव है एक अध्यापक 5 कक्षा संभाल रहे। ऐसी स्थिति के कारण सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते हैं और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों के दैनिक स्थिति के कारण गली-गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए तमाम प्राइवेट स्कूलों ने शिक्षा को

व्यवसाय बना लिया है और अभिभावकों का भरपूर शोषण कर रहे हैं यह स्थिति संपन्न राज्यों में शुमार पंजाब की ओर तो और आश्चर्य होता है आखिर सरकारों को स्कूलों में अध्यापक की व्यवस्था करने के लिए कितना वक्त चाहिए? क्या सरकार इतनी लाचार है कि 4 सालों में स्कूल में अध्यापक भी नहीं नियुक्त कर सकती है गांव के स्कूल में एक अध्यापिका है तो यह 3 साल में स्कूल गई है यहां बच्चों को पढ़ने के लिए एकएनआरआई ने अपने स्तर पर वेतन देकर दो अध्यापिका की व्यवस्था की है ऐसी स्थिति में यह तो तय है कि वहां पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य प्रभावित होगा। केंद्र सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून बनाया था। इसका मकसद यही था कि हर बच्चे को सारी शिक्षा मिले क्योंकि है अधिकार लेकिन सिर्फ कानून बन जाने से बात नहीं बनती है तो सरकारों को देखना होगी कानून के मुताबिक काम हो रहा है या नहीं।

1.2.5 योग्य शिक्षकों का अभाव

भारतीय शिक्षा प्रणाली बुरी नहीं है बल्कि समस्या योग्य शिक्षकों की कमी है। शिक्षक के जुनून या वित्तीय कर्म के बिना अच्छे शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में नहीं आते हैं। दुर्भाग्य बस हमारे देश में शिक्षक विशेष का सरकारी स्कूल प्रणाली में काम करने वाले शिक्षकों को प्रशासन की समस्या के रूप में देखा जाता है। इसमें सारा जोर अध्यापकों के कौशल और प्रेरणा को विकसित करने के बजाय उन्हें कक्षा में लाने पर केंद्रित रहता है। एनसीईआरटी द्वारा कराए गए एक अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण डिजाइनिंग में शिक्षकों की फीडबैक को कोई महत्व नहीं दिया जाता तथा साथ ही स्थानीय मुद्दों में कोई खास बदलाव नहीं किया जाता और ना ही इन पर विचार करने को अहमियत दी जाती है।

1.3 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा मनुष्य के जीवन में चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी देश के विकास एवं उसके सामाजिक उत्थान में उसे देश के नागरिकों का सहयोग अति आवश्यक होता था। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक एवं नैतिकता से परिपूर्ण होती थी। जैसे-जैसे हम आधुनिकता और विज्ञान की ओर बढ़ते गए, वैसे-वैसे शिक्षा प्रणाली से धर्म संस्कृति और नैतिकता का विलोम होता गया है। विज्ञान युग तक आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आए हैं। शिक्षा का व्यवसायीकरण, राजनीतिकरण हुआ। परंतु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्य आदर्श में मान्यताओं का परिचय नहीं देती, तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती। आधुनिक समय में योग्य शिक्षकों का अभाव है एवं अयोग्य शिक्षकों का बाहुल्य है। योग्य शिक्षक द्वारा किए गए कार्यों का प्रचार प्रसार होना चाहिए। वहीं उनकी लिखी हुई कृतियों को पाठ्यक्रम में लागू किया जाना चाहिए। इसी तथ्य को ध्यान में रखे हुए शोधकर्त्री ने बांदा जनपद के प्रसिद्ध कवि **चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति'** जी का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान विषय पर लागू करने का निर्णय किया है।

1.4 समस्या कथन

शोधकर्त्री द्वारा शोध के लिए जिस समस्या का चयन किया गया है उसका शीर्षक इस प्रकार है।

"चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी का शैक्षिक योगदान"।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध अध्ययन में उद्देश्यों का निर्धारण उस अध्ययन को निश्चित दिशा प्रदान करता है जिससे अध्ययन सरल व सुव्यवस्थित सुगम हो जाता है। अतः इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

- चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
- चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी की साहित्य सर्जन का अध्ययन करना।
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिन्हित करना।

1.6 शोध विधि

किसी भी शोधकर में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसंधान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारू रूप से प्रचलित करने का ढंग होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का आविष्कार किया, जिसका प्रयोग समस्या प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

प्रस्तुत लघु शोध का अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रकृति के आधार पर तथा अध्ययन की समस्या को देखते हुए अनुसंधान विधि के रूप में वर्णनात्मक अध्ययन विधि एवं केस अध्ययन विधि का चयन किया गया है।

1.6.1 वर्णनात्मक अध्ययन

शिक्षा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसंधान का महत्व बहुत अधिक है। इस विधि का प्रयोग शिक्षा व मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से होता है। जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार "वर्णनात्मक अनुसंधान क्या है का वर्णन एवं विश्लेषण करता है परिस्थितियों अथवा संबंध जो वास्तव में वर्तमान है अभ्यास जो चालू है विश्वास, विचारधारा तथा अभिवृत्तियां जो पाई जा रही है प्रक्रिया जो चल रही है, अनुभव जो प्राप्त किया जा रहे हैं अथवा नई दिशाएं जो विकसित हो रहे हैं उन्हीं से इसका संबंध है" वर्णनात्मक अनुसंधान का प्रयोग निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने में होता है वर्तमान स्थिति क्या है? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्णनात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य वर्तमान दशाओं, क्रियाओं,अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय के ज्ञान

प्राप्त करना है। वर्णनात्मक अनुसंधानकर्ता समस्या से संबंधित केवल तथ्यों को एकत्र ही नहीं करता, बल्कि वह समस्या संबंधित विभिन्न चरणों में आपसी संबंध ढूंढने का प्रयास करता है साथ ही भविष्यवाणी भी करता है।

1.6.2 केस अध्ययन विधि

किसी व्यक्ति समूह या संस्था के संबंध में गहन अध्ययन हेतु एक महत्वपूर्ण विधि केस अध्ययन विधि है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति में रोगात्मक लक्षणों को पहचान कर कारणों के ज्ञान के आधार पर निदान किया जाता है अतः इसे नैदानिक विधि भी कहते हैं इस विधि के द्वारा अध्ययनकर्ता किसी रोगी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए उसके जीवन की सभी व्यक्तियों की घटनाओं का एक विस्तृत इतिहास ज्ञात किया जाता है घटनाओं की जानकारी में प्रारंभिक सूचनाओं, अतीत की घटनाएं, वर्तमान अवस्थाओं के बारे में अधिक जानकारी संकलित की जाती है तथा उनका विश्लेषण कर परिणाम ज्ञात किए जाते हैं जानकारी में साक्षात्कार, प्रश्नावली, व्यक्तित्व परीक्षण तथा मापनी आदि का प्रयोग किया जाता है पर व्यक्ति का गहन अध्ययन विकास का क्रम तथा जीवन की समस्या जानने की संचित विधि है इस विधि में अनेक स्रोतों जैसे व्यक्ति विशेष उसके माता-पिता, पारिवारिक जन, रिश्तेदार, पड़ोसी, विद्यालय, मित्रगणों, सहयोगियों एवं संबंधित अभिलेखों से सूचना का अधिकार किसी व्यक्ति स्थिति समूह अथवा संस्था के संबंध में अध्ययन किया जाता है।

1.7 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्रस्तुत अध्ययन में चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया गया है। वह हिंदी के एक आदर्श शिक्षक होने के साथ-साथ एक लेखक एवं कवि के रूप में प्रतिष्ठित है तथा अपनी लेखनी से जन सामान्य को लाभान्वित कर रहे

हैं। निश्चय ही यह लघु शोध विशेष कर हिंदी भाषा के शिक्षकों के लिए प्रेरणादाई है और भी जीवन में काव्य के समन बिखरने में सक्षम हो सकेंगे। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी एवं जन सामान्य भी उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त कर हिंदी भाषा एवं संस्कृति में उत्थान अपना योगदान दे।

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का अध्ययन करना इस उपक्रम का विज्ञान तथा महत्वपूर्ण चरण है क्योंकि व्यक्ति अपने अतीत से संचित एवं आलेखन ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सदन करता है। केवल मानव ही ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र ज्ञान का लाभ उठा सकता है मानव ज्ञान के तीन पद होते हैं ज्ञान के कथित करना दूसरी पीढ़ी को ज्ञान का स्थानांतरण को ज्ञान में वृद्धि करना यह तत्व शोध में विशेष महत्व क्योंकि वास्तविकता के समीप आने में उपलब्ध ज्ञान सक्रिय भूमिका निभाता है। व्यवहारिक आधार पर संपूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पत्र पत्रिकाओं में संचित रहता है मानव में प्रत्येक पीढ़ी और संचित ज्ञान को प्राप्त का चिंतन कर परिषद कर अथवा पूर्ण एवं आंशिक परिवर्तन करके निरंतर में विकसित करने का प्रयास करती है। किसी भी शोधकार्य की सफलता के लिए आवश्यक है कि शोधकर्ता पुस्तकालय का उपयोग करें अपनी समस्या से संबंधित जितना भी यथा संभव उपलब्ध पुस्तक के ग्रंथ पत्रिकाएं विगत वर्षों में किए गए अनुसंधानों के संतोष विवरण से अपने को पूर्व परिचित करें। जिससे यह ज्ञात होता की समस्या संबंधित किस पथ पर या किस पक्ष कार्य हो चुका है।

अनुसंधान कार्यों में साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा करने की आवश्यकता, उपयोगिता तथा महत्व स्वयं सिद्ध है अनुसंधान के क्षेत्र में संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान हो जाता है। साहित्य के सर्वेक्षण

के द्वारा ही अनुसंधानकर्ता किसी क्षेत्र में क्या हो चुका है? किस क्षेत्र में क्या-क्या शेष है? से अलग करके अपनी समस्या को सार्थक,मौलिक बनाता है एवं अनुसंधान की एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने में मदद करती है अनुसंधान में साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्व के बारे में विद्वानों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए हैं।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार "व्यवहारी दृष्टि से समस्त मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालय में प्राप्त किया जाता है अन्य जीवों, प्रत्येक पीढ़ी में प्रारंभ करना पड़ता है से भिन्न मान पूर्व में संग्रहित व अभिलेखित ज्ञान से निर्माण करता ज्ञान के अथाह भंडार में इसकी सतत योगदान ही मानव प्रयासों के सभी क्षेत्रों में प्रगति को संभव बनाते हैं"।

किसी भी अनुसंधान कार्य को उचित रूप से संपादित करने के लिए संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक होता है क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने अभीष्ट अनुसंधान क्षेत्र में अर्थपूर्ण प्रश्न की पहचान करने एवं ठोस तथा वस्तुनिष्ठ आधार प्राप्त करने में समर्थ होता है तथा वह पूर्वान्वेषित अनुसंधान क्षेत्र या किसी समस्या पर पहले किए गए शोध द्वारा उत्तर पुनः शोध का विषय पर बनने की दिशा में पुनरावृत्ति दोष से बच सकता है संबंधित साहित्य से अधोलिखित जानकारी उपलब्ध होती है।

- किसी पूर्व अन्वेषी क्षेत्र में शोधों के अंतर्गत ऐसे चरों के विषय में संकेत प्राप्त होते हैं जिनके महत्व को पूर्व में प्रमाणित किया जा चुका है।
- पूर्व संपादक कार्यों का अन्य कार्यों की जिन्हें सार्थक ढंग से आगे बढ़ाया जा सकता है यह लागू किया जा सकता है सूचना प्राप्त होती है।
- किसी क्षेत्र विशेष के अंतर्गत निष्कर्ष की दृष्टि से संपन्न कार्यों की यथा स्थिति का पता लगता है।

- लिए गए अनुसंधान विषय में किस विधि का प्रयोग उपयुक्त होगा कौन से ऊपर उचित होंगे किस प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा इत्यादि की जानकारी मिलती है।
- लिए गए अनुसंधान विषय की सफलता तथा उसकी उपयोगिता के संबंध में अनुमान लगाया जा सकता है।
- समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की समुचित विधि का सुझाव देता है।

2.2 शैक्षिक योगदान से संबंधित कतिपय शोध अध्ययन

सुधरता द्वारा शैक्षिक योगदान से संबंधित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का अध्ययन किया गया है जिसका विवरण निम्नलिखित है

1. रामनिवास वर्मा (2005) ने "भारतीय जीवन मूल आधारित शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में स्वामी शिवानंद जी के शैक्षिक विचारों के प्रासंगिकता शीर्षक पर शोध कार्य" किया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि

- भारतीय संस्कृति मूलतः एक जीवन मूल आधारित जीवन पद्धति है जो अनिवार्य रूप से भारतीय लोग मानस को मूल अधिकारों की ओर निर्देशित करती है यह मूल अधिकार भारतीय जनजाति पद्धति के प्रेरणा सोहर तथा सदेव से उसे उत्कृष्ट उपलब्धियां को प्राप्त कर अद्वितीय मानव व्यवस्था के निर्माण की दिशा में अनुसार करते रहे हैं भारतीय संस्कृति अपनी सरलतम अर्थ में भी लोग जीवन में जीवन मूल्यों के अनुप्रयोग वह विनियोग का ऐसा अन्य उदाहरण प्रस्तुत करती
- है जो भारतीय जनजीवन को गति प्रदान करता है तथा मानव रचनात्मकता के घटकों को विकसित कर निरंतर नए भारतीय जीवन मूल्यों के निर्माण का कार्य करता है।

- सांस्कृतिक मूल्यों की दृष्टि से भारतीय जीवन मूल्यों को विशेषज्ञ के विभिन्न क्षेत्रों से प्रादुर्भूत हुआ माना जा सकता है। यह विशेषज्ञता के क्षेत्र में भारतीय जीवन मूल्यों को तर्क आधार प्रदान करते हैं।

2. डॉ शशिकांत शर्मा (2007) ने "गिजूभाई बधेका का शैक्षिक चिंतन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा प्रदर्शन में इसकी प्रासंगिकता" का अध्ययन किया और यह पाया कि

- गिजूभाई शिक्षा द्वारा स्वतंत्रता निर्भयता स्वालंबन सत्य प्रेम अहिंसा त्याग मैत्रीभाव, दया अपरिग्रह सहिष्णुता सेवाभाव सामाजिक संवेदनशीलता स्वच्छता सदा चरण सादगी व सरलता सद असद विवेक, वैज्ञानिक अभिव्यक्ति जैसे मूल्यों का विकास करने पर बल देते हैं उन्होंने आत्म साक्षात्कार सौंदर्य प्रेम स्वाधीनता नियमन व स्वतंत्र जैसे मूल्यों को अत्यंत मौलिक रूप से परिभाषित किया है।
- गिजूभाई कहते हैं कि मनुष्य शरीर की शक्ति बढ़ा सकता है बुद्धि का वैभव प्राप्त कर सकता है परंतु अगर मनुष्य आत्मा की शुद्धि प्राप्त करने में पूरी जिंदगी व्यतीत कर दे तब भी सफलता दूर ही रहेगी यह विकास इतना कठिन इतना सोच में है की मात्र कथा कहानी सुना कर या उपदेश देकर नहीं किया जा सकता। वह कहते हैं कि सत्य पाठ पढ़कर अलग से सत्य की अपेक्षा रखने वाला व्यक्ति या तो मूर्ख होता है अज्ञानी होता है या ढोंगी। इस प्रकार गिजुभाई उपदेशआत्मक रूप से नीति शिक्षक की व्यवस्था सिद्ध करते हैं वह कहते हैं की नीति शिक्षक का राग अलापने वालों की नसों में अनीति के भयंकर कम घुस गए लगते हैं क्योंकि वह अपने अंदर की अनीति से भय खाते हैं उससे लड़ने में सक्षम नहीं है अतः उसे दुनिया से हटाने के लिए लड़ रहे हैं वह कहते हैं की नीति शिक्षक मनुष्य को आत्मा की स्वतंत्रता से भ्रष्ट करता

है मनुष्य स्वयं अनीति पर चलता है पर चाहता कि बालक नीतिमान बने यह कदापि संभव नहीं है।

- गिज़ूभाई बालक को प्रकृति शिक्षा दिए जाने का प्रबल समर्थन करते हैं उनका कहना था कि अपने बालक को प्रगति से दूर रखकर क्या हम उसको देव बनायेंगे अथवा दानव? प्रकृति द्वारा किया दिया गया शिक्षण गिज़ूभाई की दृष्टि में उत्तम सामाजिक शिक्षण है इस शिक्षण से उसका नैतिक विकास सहज स्वाभाविक बनता है वह धार्मिक विकास के सुदृढ़ आधार के रूप में चिरस्थाई रहता है प्रकृति शिक्षण में स्व शिक्षण का मूल भी निहित है गिज़ूभाई कहते हैं की प्रकृति की शिक्षा धैर्य एवं विश्वास की पोषक होती है प्रकृति ही मनुष्य की आत्मा एवं देह की प्रथम धाय है अतः उसे चाहिए कि वह बाल्यावस्था से ही प्रकृति के अवदान से अपने प्राणों को भर ले। अपने आत्म विकास के तत्व उसे प्रकृति से ही ग्रहण कर लेने चाहिए।

3. रेनू सिंह (2008) ने “भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान का अध्ययन” किया इसमें इन्होंने पाया कि

- छत्रपति शाहूजी महाराज के शैक्षिक विचारों से यह तत्व पूर्ण रूपेश स्पष्ट है कि आदर्शवादी होते हुए भी आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं वास्तविकताओं के प्रति भली-भांति जागरूक थे इसलिए उन्होंने जीवन के कटु शक्तियों की अपेक्षा नहीं की शिक्षा के द्वारा बुद्धि मस्तिष्क शरीर आत्मा के साथ ही हाथों का प्रशिक्षण करने के पक्ष में भी थे।
- राष्ट्रीय भावना का समावेश और भारत की पुनर्निर्माण की तीव्र अभिलाषा छत्रपति शाहूजी के शैक्षिक विचारों के विशेषता है यह लोग विद्यार्थी की असीमित शक्ति में विश्वास करते थे और उसे शक्ति का ज्ञान वे शिक्षा के माध्यम से देना चाहते थे।

- शिक्षा के द्वारा ही इन्होंने उच्च विचारों का प्रचार एवं प्रचार करना चाह इनका विश्वास था कि वास्तविक शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का सर्वाधिक विकास संभव है छत्रपति शाहूजी महाराज ने शिक्षा के उद्देश्य को भौतिकतावाद एवं आध्यात्मिक वार्ड से संबंधित बताया है भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन में इस प्रकार का तालमेल बैठाकर तथा शिक्षा का सही सही उद्देश्य निर्धारित कर आधुनिक शिक्षा को नई दिशा प्रदान की। इससे स्पष्ट है कि इस महापुरुष के शैक्षिक उद्देश्य आधुनिक शिक्षा के लिए प्रासंगिक है
- कोल्हापुर नरेश श्री छत्रपति शाहूजी महाराज ने पुस्तकीय शिक्षा का समर्थन न करते हुए देश की आधारभूत आवश्यकताओं से संबंधित पाठ्यक्रम का निर्धारण किया। आधुनिक शिक्षा में यदि इन महापुरुषों के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम को महत्व दिया जाए तो अवश्य शिक्षा अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होगी।

4. किरन सिंह (2008) ने रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया और पाया कि –

- रवींद्र नाथ टैगोर ने शिक्षा को व्यापक रूप में लिया है उनका मत है कि शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक होती है।
- टैगोर भी अपने स्कूल की स्थापना नगर के कोलाहल से दूर शांत वातावरण एवं प्रकृति की गोद में करना चाहते थे। जहां छात्र और अध्यापक शिक्षा की साधना में लग सके।
- टैगोर चाहते थे कि ईश्वर मानवीय गुणों का प्रतीक हो और अंतिम सत्य को मानवता की कसौटी पर कसा जाए। मानव की जो वास्तविकता ही मानवता है।

5. आबी शादाब (2009) ने "डॉक्टर जाकिर हुसैन एवं डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि

- दोनों के विचारों में पारंपरिकता एवं आधुनिकता का सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है।
- जाकिर साहब एवं कलाम साहब दोनों के अनुसार शिक्षा बच्चों के सर्वोत्तम का सर्वांगीण विकास है दोनों विचारकों के इस प्रार्थना को भी शिक्षा शास्त्री स्वीकार करते हैं।
- अनुशासन के संबंध में भी दोनों के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं आंतरिक रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन की रचना दोनों विचारक करते शारीरिक दंड को बिल्कुल समाप्त करने के पक्ष में है वर्तमान समय में आंतरिक रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन के पक्ष में है
- पाठ्यक्रम में इन दोनों विचारों ने से संबंध समन्वय समाकलन एवं क्रिया पर बल दिया।

6. सुनीता शर्मा (2022) ने "स्वामी रामसुखदास जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन" किया इसमें इन्होंने पाया कि

- शिक्षक को सदैव अपने छात्रों को सीख देने की तट पर होना चाहिए शिक्षा का महत्व उसका स्थान प्रमुख है छात्रों का चरित्र शिक्षित चरित्रवान जीव को पागल हेतु तैयार करना शिक्षा का कार्य होना चाहिए समाज को एक दिशा प्रदान करने का कार्य स्वामी सुखदास जी ने किया स्वामी सूरदास जी स्वयं संपूर्ण जीवन में विद्यार्थी ही बने रहे और सदैव सीखने को तत्पर रहे
- स्वामी सूरदास जी एक बहू आयाम प्रतिभा की ढाणी से स्वयं अपने आप में एक दिव्य ज्योति थे साथ ही सरल मनुष्य जिनमें सभी विशेषताएं तथा अच्छा थी जो

एक महान व्यक्ति में होते स्वामी सूरदास जी ने सदैव युवा वर्ग को प्रेरित किया उनके अनुसार युवा वर्ग ही इस धरा पर उपलब्ध हुए प्रबल संसाधन है जो यदि ग्रहण संकल्प कर ले तो शीघ्र ही सुंदर रूप में परिवर्तित किया जा सकता है

- स्वामी सूरदास जी के विचारों से विद्यार्थियों को कठिन परेशान करने प्रेरणा मिलती है उनके अनुसार परिश्रम से ही सफलता के उत्तम शिखर पर पहुंचा जा सकता है स्वामी रामसुखदास जी हमेशा लोगों को उनकी समस्याओं का समाधान करने की कोशिश करते थे। स्वामी रामसुखदास जी के अनुसार शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक मानसिक बौद्धिक एवं अत्यधिक विकास की प्रक्रिया है स्वामी रामसुखदास जी ने अपने शैक्षिक विचारों के अनुसार शिक्षा ज्ञान और बुद्धि के रास्ते से गुजरने वाली अनंत यात्रा है जिसके द्वारा ईर्ष्या , कलह, घृणा से रहित मानवता के विकास के दरवाजे खुलने लगते हैं।

7. अंकित कुमार (2022) ने "डॉक्टर गया प्रसाद स्नेही का शैक्षिक योगदान का अध्ययन" किया जिसमें उन्होंने पाया कि

- डॉक्टर गया प्रसाद स्नेही का मानना है कि गुरुकुल में शिक्षकों आचार्य व कर्तव्य है कि सिर्फ बच्चे को ऐसी प्रेरणा, प्रशिक्षण एवं सीख दे ताकि यह समाज एवं स्वयं के लिए तथा राष्ट्र एवं विश्व के लिए सुंदर गुलशन का निर्माण कर सके।
- शिक्षकों को चाहिए कि वह बिना भेदभाव के अपने शिष्यों को उन्नति प्रगति उसके अंत में लिए निर्णयों का विवेचन कर तथा गणों का समावेश करें।
- विद्यार्थी को अपने कर्म के बल पर जीवन का निर्माण करना चाहिए विद्यार्थी को विनम्र अनुशासित नियमबद्ध और सक्रिय रहना चाहिए।

- शिक्षा में व्यक्ति को महत्वपूर्ण इकाई माना है क्योंकि अगर व्यक्ति सड़क शिक्षित चरित्र और गुड वाला होगा तो समझ भी शिक्षित होगा।

8. अजीत कुमार (2022) ने "केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य का अध्ययन" किया जिसमें उन्होंने पाया कि

- किसी भी शोध अध्ययन के निष्कर्ष के साथ करता उसके शैक्षिक उपादेयता पर निर्भर है शैक्षिक निहितार्थ होने पर शोध की कार्य कोई उपयोगिता सिद्ध नहीं होती। जिससे अमूल्य समय एवं धन की हानि ही नहीं होती बल्कि राष्ट्र को भी उसका लाभ प्राप्त नहीं होता। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित है।
- जिस प्रकार केदारनाथ अग्रवाल ने ग्रामीण परिवेश में अपना जीवन व्यतीत करते हुए ग्रामीण जीवन को अनुभूत किया इस प्रकार हमें भी अपने परिवेश को गहराई से समझ कर अपने जीवन में आत्मसात कर उसको अपने भाभी जीवन में उपयोगकर सार्थक बनाना चाहिए।
- जिस प्रकार केदार जी अपने समकालीन प्रतिष्ठित कवियों से परिचित हुआ मित्रता होने से उनके काम से जन्म निखार आया उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन में अच्छे मित्र बनना चाहिए।
- जिस प्रकार कभी केदारनाथ अग्रवाल वकालत करते हुए आर्थिक लाभ न होने का रोजी-रोटी हेतु रुचि पूर्वक लेखन को जनता से अपनाया इस प्रकार हमें भी जीवन में किसी क्षेत्र विशेष में ऊंचाई पर पहुंचना चाहिए ताकि भविष्य में उसको आपदा के समय जीवन मापन के साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सके।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

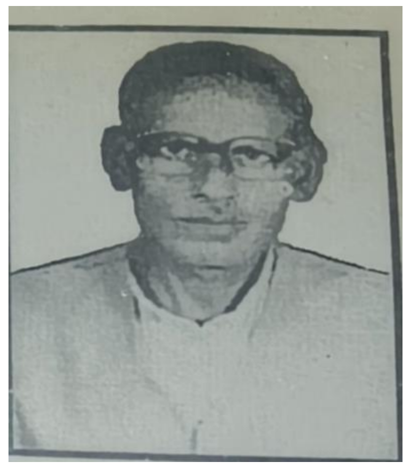
शोधकर्त्री ने पाया कि पूर्ववर्ती शोधों में डॉक्टर जाकिर हुसैन एवं डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम के सच्चे विचारों को तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय जीवन मूल आधारित शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में स्वामी शिवानंद जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता,भारत में छत्रपति शाहूजी महाराज का योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में अध्ययन, स्वामी रामसुखदास जी के शैक्षिक विचार, केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्य का अध्ययन, डॉक्टर का गया प्रसाद स्नेही जी का शैक्षिक योगदान का अध्ययन, गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिंतन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया। संबंधित साहित्य के अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात शोधकर्त्री को प्रस्तुत समस्या "चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी का शैक्षिक योगदान" से संबंधित अध्ययन कहीं देखने को नहीं मिला। चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी का शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान है अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर कार्य करने का निश्चय किया गया है।

तृतीय अध्याय

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

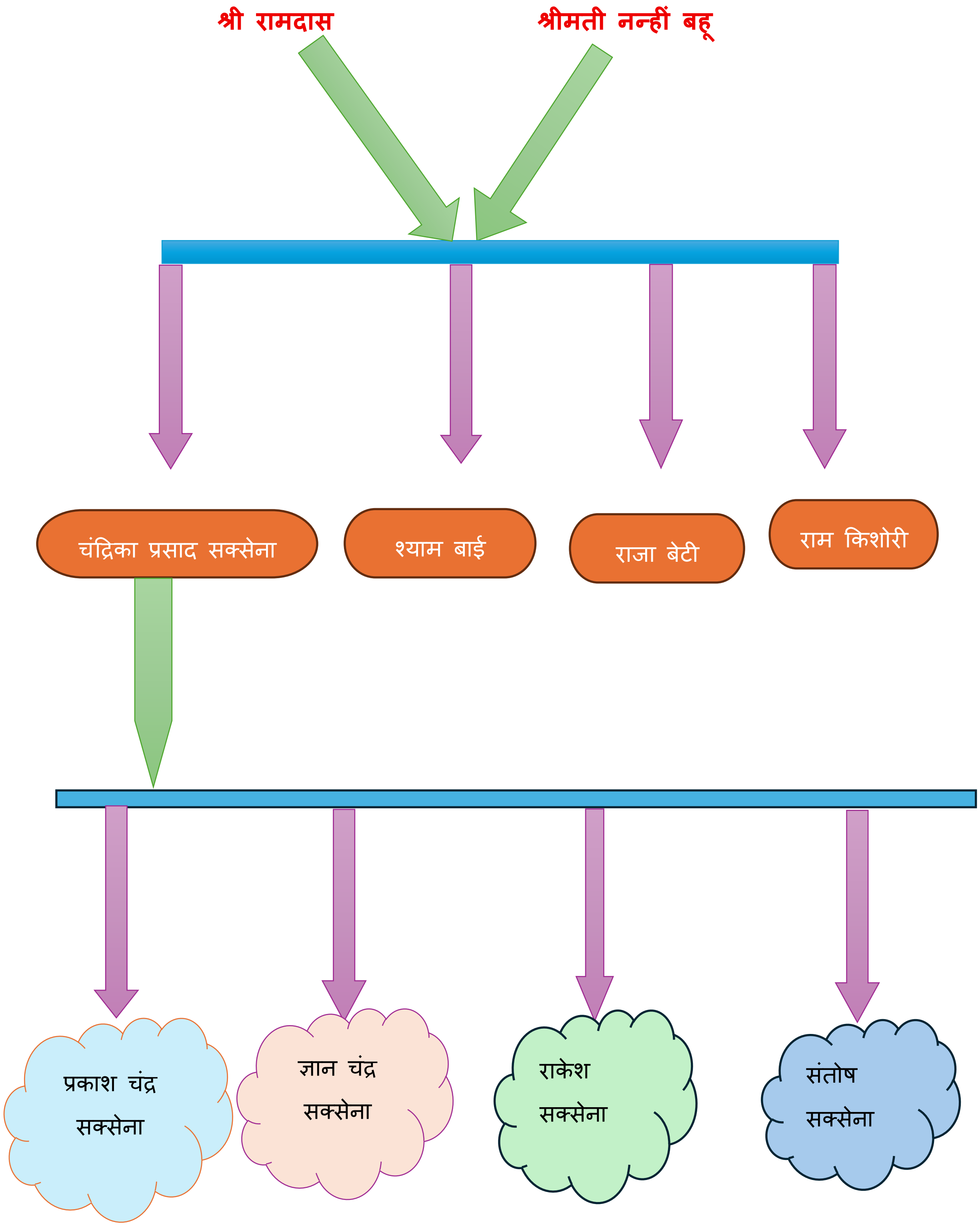
3.1 जीवन परिचय

चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी का जन्म 13 अगस्त 1930 को ग्राम लरौंद, तहसील मौदहा, जनपद हमीरपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनका बचपन बहुत ही गरीबी से बीता। इनके पिता श्री रामा तेजस्वी एवं माता श्रीमती नन्ही बहू दोनों ही अशिक्षित एवं श्रमजीवी थे। इनके पिता आजीविका चलाने के लिए कृषि का काम करते थे। निर्धनता शोषण एवं सामाजिक उत्पीड़न उनके जन्मजात साथी थे, जो जीवन भर साथ रहे। माता-पिता का बचपन में ही देहावसान हो जाने से मिडिल के बाद एम.ए. साहित्य रत्न तक परीक्षाएं इन्होंने शिक्षक रहकर स्वाध्याय के द्वारा अच्छी श्रेणी में प्राप्त की।





3.2 चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी की वंश परंपरा



3.3 शिक्षा

प्रारंभिक शिक्षा में कक्षा 2 तक की पढ़ाई उन्होंने घर पर ही की। गांव में शिवप्यारेलाल सक्सेना जी की एक अथाइ थी, जिसमें अध्यापक गण बच्चों को बुलाकर पढ़ाते थे। उनकी माताजी जब कुएं से पानी भरने जाती थी, तो उनको भी अपने साथ ले जाती थी और उनको इस अथाइ के बाहर बैठाकर पानी भरने चली जाती थी तो कीर्ति जी ने वहीं बैठे-बैठे सुन सुनकर अपनी पूरी तैयारी करी। जिससे उनका प्रवेश कक्षा तीन में हुआ, फिर कक्षा 5 तक की पढ़ाई करने के बाद गांव के पास ही एक नैराइच गांव था, जहां पर पढ़ने जाते थे और पढ़ाई में भी इतने होशियार थे कि उनके हेड मास्टर मौलवी साहब जो मौदहा से पढ़ने आते थे। उनके सामने मौदहा में रहने तथा स्वयं उन्हें पढ़ाने का प्रस्ताव रखा, लेकिन गरीबी के कारण उन्होंने मौदहा में रहने का प्रस्ताव मना कर दिया तो फिर मौलवी साहब ने उनसे कहा कि कोई बात नहीं तुम मेरे साथ चला करो, तो 12:00 बजे स्कूल बंद होने के बाद वे उनके साथ चले आते थे और उनके साथ रहकर मुख्य विषयों की पढ़ाई करते थे और वापस घर आ जाते थे। इस तरह उन्होंने मिडिल तक की पढ़ाई अपनी पूरी करी। क्योंकि घर की परिस्थितियों ऐसी नहीं थी कि वह आगे पढ़ सके इसलिए उन्होंने पढ़ने के साथ-साथ पढ़ाना भी प्रारंभ किया। जिससे उन्होंने अपनी 12वीं की पढ़ाई



नेशनल इंटर कॉलेज मौदहा से पूरी करी। इसके बाद उन्होंने CT की ट्रेनिंग इलाहाबाद से पूरी की।

3.4 अध्यापन कार्य

CT करने के बाद उन्हें सीधे राजकीय इंटर कॉलेज अल्मोड़ा में नियुक्ति पत्र मिला और 7 वर्ष तक वहां अपनी सेवाएं देने के बाद कुछ घरेलू परिस्थितियों के कारण उन्हें घर लौटना पड़ा, फिर वहां से लौटकर उन्होंने राजकीय इंटर कॉलेज हमीरपुर में अपना



अध्यापन कर प्रारंभ किया।

इसके बाद उनको ऐसा महसूस हुआ कि वह बच्चों को पढ़ाई के अलावा कुछ अन्य क्रियाकलापों की भी शिक्षा दे सकते हैं, जैसे योग, स्काउटिंग की शिक्षा आदि। उन्होंने सोचा कि अगर वह खुद का विद्यालय खोले तो वहां भी बच्चों को हर तरह की ट्रेनिंग दे सकते हैं। इसके लिए वह स्वतंत्र होंगे। उन्होंने राजकीय इंटर कॉलेज हमीरपुर से इस्तीफा दे दिया और पारिवारिक रिश्तेदार बैद्यनाथ सक्सेना जी के स्कूल में पढ़ाना शुरू किया, फिर गांव में अगर उन्होंने अपना खुद का स्कूल खोला। जिसका नाम क्षेत्रीय कृषक विद्यालय रखा। इसमें 15 से 20 गांव के बच्चे पढ़ने आते थे। यहां 30 से 35 की संख्या में अध्यापक तथा 1000 की संख्या में छात्र पढ़ते थे। वह अध्यापकों का सहयोग लेकर

दिन के साथ-साथ रात में भी बच्चों को पढ़ाते थे और आज जिले के आसपास कई विद्यार्थी अधिकारी रैंक में नियुक्त हुए हैं।

फिर विद्यालय में प्रबंध समिति से कुछ मनमुटाव के कारण विद्यालय उन्हीं को सौंप कर अपनी अगली यात्रा में निकल गए। इसके बाद उन्होंने कॉलेज में ज्वाइन किया। इसके बाद 1976 में इचौली में रहकर इंटर कॉलेज में अपना अध्यापन कार्य किया। फिर इसके बाद आयोग द्वारा उनका सिलेक्शन राजकीय इंटर कॉलेज तिंदवारा में 1984 में हो गया। जहां पर उन्होंने 1991 तक अपनी सेवाएं दी और सेवानिवृत हो गए।

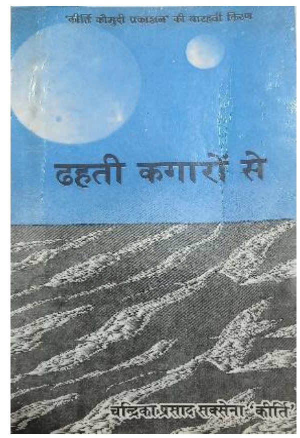
3.5 चंद्रिका का प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी एवं उनके साहित्य से संबंधित विद्वानों की सम्मतियां

डॉ. देवलाल मौर्य

- श्री चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति उन सरस्वती साधकों में से एक है जिनके हृदय में वर्तमान सामाजिक विषमता के प्रति असीम दर्द एवं आकुलता है। कीर्ति जी के अंतर्मन में इस तरह का वेदना आत्मिक भाव जगना स्वाभाविक है क्योंकि उनके व्यक्तित्व का निर्माण पश्चात भोग प्रधान मूल्य सुना होकर ऐसे भारतीय शाश्वत सामाजिक मूल्यों से हुआ है जिनमें राष्ट्रीय अस्मिता एवं जन सामान्य के प्रति आगाज का भाव है आज साहित्य के क्षेत्र में एक विशेष वर्ग के चाटुकारों का मेला लगा हुआ है। व्यक्तिगत स्वार्थ को कविताओं के माध्यम से बनाया जा रहा है। ऐसे में निस्वार्थ भरी सक्सेना जी की कविताएं उनके व्यक्तित्व को और भी महान बनाती है। कीर्ति जी की कविताओं की विषय वस्तु कल्पना लोक की उड़ान न होकर एक ऐसे धरातल से जुड़ी है, जिसमें ग्रामीण परिवेश से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के भाव समायोजित हैं। आपने जहां कहीं अतीत की कथाओं का सहारा लिया है वहां आपका तात्पर्य प्राचीन इतिहास प्रस्तुत

करना ना होकर उसके पीछे यह धारणा बराबर रहिए की अतीत से सीख कर हम भविष्य के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त करें नई पीढ़ी जो देख भ्रमित एवं असमंजस में है उसे स्वस्थ चिंतन प्रदान कर आगे बढ़ाने की प्रेरणा दें।

- आज शहर हो या गांव, चतुर्थी भौतिकता की चकाचक युक्त आंधी का विकराल रूप देखने को मिलता है। खाने का तात्पर्य यह है कि समाज को जैसा बदलना है वह तो बदल ही रहा है और बदलेगा अभी पर इस बदलते स्वरूप की जो लोग अगुवाई कर रहे हैं वह समाज के लिए बहुत ही घातक है कीर्ति जी की कविताओं में ऐसे रंग भरे भाव जगह-जगह देखने को मिलते हैं। उनका मानना है कि आगे बढ़ने के लिए प्रत्यक्ष और संघर्ष तो करो पर अपनी सामाजिक मर्यादा को भुलाकर नहीं पर दुर्भाग्य इस समय सामाजिकता का है जो अपनी संस्कृति और सभ्यता को लेकर आगे बढ़ाने की कोशिश करता है। उसे बहुत ही हेय भाव से देखा जाता है और जो जितना ही नंगा नाच करता उसमें उतनी आधुनिकता **का रूप देखा जाता है।** कीर्ति जी का यह विश्वास है कि बिना संस्कृत उन्नयन के समाज का विकास संभव है बहुत ही सत्य पूर्ण है।



- **सक्सेना जी का** नारी विषयक दृष्टिकोण भी बहुत स्पष्ट है। उनकी दृष्टि में नारी का दूसरा नाम श्रद्धा और विश्वास है। आज की इस भौतिक दुनिया में पुरुष तो अपने नैतिक दायित्वों से नीचे उतर आया ही है, नारियां भी कुछ ऐसा ही करने लगी है। ऐसे में नारियों को सचेत करते हुऐ सक्सेना जी ने कहा है कि तुम्हें त्याग, समर्पण, सेवा, सरलता, सहजता को आत्मसात करके ऐसे आत्मबल को जगाना होगा जो वर्तमान जीवन की आपाधापी भरी जिंदगी में तुम्हारे स्त्रीत्व को कुछ स्थायित्व दे सके। जैसे

माला से टूट कर गिरी हुई कली धूल में मिलकर अस्तित्व विहीन हो जाती है, वैसे ही नारी यदि सामाजिक एवम सांस्कृतिक धारा से अलग हटकर चरित्र को बेचने में लग जायेगी तो वह निराधार हो जाएगी।

"प्रीति सदा बलि पर पलती है, चंचल चितवन प्यार नहीं है।

यह जीवन कांटों की बाड़ी, थिर स्वप्निल संसार नहीं है।

टूटे हुए पुष्प का गौरव, स्वागत बस पलभर होता है,

नारी की कलियों का तो, स्वाभाविक उपवन घर होता है"।

- ढहती कगारों से कवि चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति की इन्हीं दार्शनिक वैचारिक और प्रशस्त भावों की दिग्दर्शक सशक्त काव्य रचना है। जिसमें सहज सुबोध शैली में गम्भीर विचारों की भावनात्मक अभिव्यक्ति हुई है। रचना की प्रत्येक पंक्ति अभिनव चिन्तन का प्रशस्त द्वार खोलती चलती है।

गुलाब सिंह गौतम

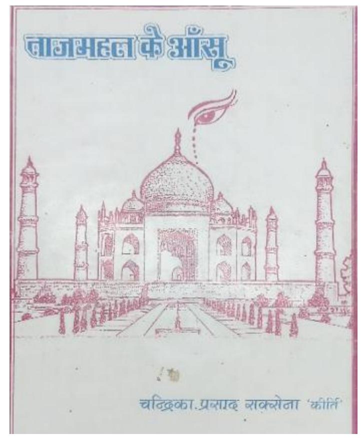
- श्री कीर्ति जी कर्तव्य निष्ठ, स्वाभिमानी आदर्शवादी विचारक भारतीय संस्कृति के उपासक एवं काव्य साधना के लिए सहज समर्पित व्यक्ति हैं। आप चिंतनशील विद्वान स्वभाव से अंतर्मुखी किंतु वाणी से ओजस्वी भक्त थे संघर्ष की शिलाओ से पिस पिस कर प्रबल पीड़ा से सिक्त उनका काव्य चंदन की तरह सुवासित होकर जनमन को अप्रियतम सुख शांति प्रदान करता है। कीर्ति उनका उपनाम ही नहीं बना एक ऐसी जीवन प्रेरणा भी है। जिन्हे उन्हें जीवन संग्राम की ऊंची नीची घाटियों में सदैव आपूर्ति से बचाकर उनकी कीर्ति चंद्रिका को निष्कलंक बनाए रखा है।

हमको दुनिया के, शहंशाह की परवाह नहीं,

बाद करने के हम, जीने का सफर करते हैं।

उक्त पंक्तियां उनकी भौतिक सुख की अपेक्षा तथा अमृत की साधना को स्पष्ट परिलक्षित करती है।

- प्रसिद्ध उर्दू के शब्दों की व्यंजनात्मक रवानी श्लेष का अर्थ गौरव एवं मुहावरों के प्रासंगिक सटीक प्रयोग ने आपकी भाव प्रकाशन शैली में ऐसी अनूठी शक्ति भर दी है कि हृदय की बात सीधे हृदय पर मार्मिक प्रभाव डालती है जिसे चोट खाए हुए संबंध व्यक्ति उनके विरोधी बन जाते हैं किंतु उनका निराला हाथी बेपरवाह बढ़ता ही जाता है श्री कीर्ति जी बांदा हमीरपुर के ही नहीं वरुण समग्र बुंदेलखंड के गौरव बढ़ाने वाले वाणी के वरदानी कवि हैं जिन पर हम गर्व करते हैं।



रोशन है जिनका नूर चमकते जरूर है,

पर्दे में कहीं हूर छिपाई नहीं जाती।

डॉ. विजय पाल सिंह

- श्री चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति रचित ताजमहल के आंसू नामक खंडकाव्य को मैं बड़े मनोयोग के साथ आलोचनात्मक दृष्टि से पद कहां जाता है कि शाहजहां ने प्रमुख शिल्पी के हाथ इसलिए कटवा दिए थे जिससे कि वह ताजमहल जैसा कोई स्मारक ना बन सके ताजमहल के संदर्भ में अनेक कवियों ने रचनाएं लिखी है साहिल लुधियानवी ने लिखा है

एक शहंशाह ने दौलत का सहारा लेकर

हम गरीबों की मोहब्बत का उदय है मजाक

22 वर्षों के अगस्त परिश्रम से प्रमुख शिल्पी ने ताजमहल का निर्माण किया। फलतः उसे अपने हाथों से हाथ धोना पड़ा। इस खंडकाव्य का केंद्र बिंदु इस

प्रमुख शिल्पी की पीड़ा है। शिल्पी भारतीय संस्कृति का प्रतीक है और शाहजहां मुस्लिम संस्कृति का।

- कथानक संचित है, परंतु कई कीर्ति ने उसे अपनी कल्पना के बल पर आधुनिक एवं समसामयिक संदर्भों का सहारा लेकर ताजमहल के आंसू नामक खंडकाव्य की रचना की है। आधुनिक युग दिशा के दृश्य आपको सर्वत्र मिलेंगे भारतीय संस्कृति के साथ राजश्री आरक्षण विशुद्ध कल का महत्व भौतिकता आध्यात्मिकता के संबंध में एवं संवेदनशीलता के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है।
- भाव और विचारों के समझने में पाठक को कहीं भी दूर होता का अनुभव नहीं होता इस खंडकाव्य की भाषा प्राण प्रांजल और परवाह नहीं है इस सुंदर खंडकाव्य के लिए मैं कई और करती सक्सेना को हार्दिक बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि वह भविष्य में भी इसी प्रकार का अपनी काव्य कृतियों से हिंदी का भंडार की समृद्धि करते रहेंगे।

3.6 चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी की काव्य कृतियां

प्रकाशित काव्य: वियोगिनी, मंगल संदेश, अस्मिता के फूल, पार्वती, श्यामा, कीर्ति कौमुदी, संजय गीत, ताजमहल के आंसू, जय भारत जय बांग्ला, ढहती कगारों से, किशोर कुसुमांजलि।

गीत संकलन: कीर्तिलता, कीर्तिकुसुम ।

चतुर्थ अध्याय

साहित्यिक सर्जना

चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी द्वारा जिन कृतियों की रचना की गई है। उनका विवरण निम्नलिखित है–

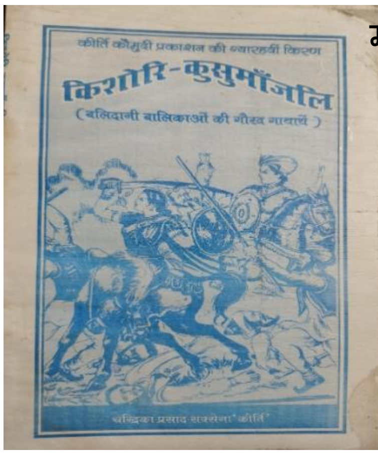
4.1 किशोरी कुसुमांजलि

भारतीय संस्कृति के गौरवशाली संस्कृति इतिहास में साथियों के त्याग प्रेम वरदान के प्रेरक अनंत गाथा विद्यमान है सारा समाज सती अनसूया सीता सावित्री पद्मिनी द्रोपदी जैसी प्रतिबद्ध धर्म पर सर्वश्रेष्ठ निछावर करने वाले साथियों की पावन चरण धुरी को नमन करता है असंभव को संभव बना सकते में समर्थ कालचक्र की गति को अपने अजय तप तेज से परिवर्तित करने वाली इन देवियों का प्रातः स्मरण करके हम सभी अपने को धन्य समझते हैं।

किंतु सती पति के साथ भोगी गई सुखानुभूतियों को स्मरण करके पति की मृत्यु पर असह विरह वेदना से मरमराहट होकर जिंदा जल जाती है प्रीतम के साथ भोगे गए सुख सानिध्य से वह एक क्षण भी विलग नहीं होना चाहती। यही उत्कट भाव उसके सहगामी बनाकर आत्मोत्सर्ग करने का ठोस आधार होता है

अनुभूति सुख आधार पर वे
जा रही सर्वस्व हारे।
प्राण प्यारे हैं नहीं पर है,
उन्हें प्रिया प्राण प्यारे।

अनघ्रात पुष्प के समान उनके शक्ति और सौंदर्य का मधु मकरंद से परिपूर्ण संकुचित स्वरूप पूर्णता पावनता का प्रतीक है उनके यशपटल में स्वार्थ और वासना भी किंचित मात्र भी खरोच नहीं है। कितना दिव्य है उनका स्वरूप अवलोकन करें



मुकूलित काली जिसने ना सुरभित
सुमन का श्रंगार देखा।
कामना की शिथिल बाहों से
ना प्रिया अभिसार देखा।
वीर की झंकार जिसमें
मूर्च्छना के तार सोए।
वे सुनहरे स्वप्न जिन पर
जाग कर अनजाने रोये।
होलियाँ, जिनके कपोलों से
झलकता लाल पानी।
होंठ स्वर खुलने ना पाए,
उठ गई जग से जवानी।
देवियों जिनके द्रगो में
सिसकता है प्यार सोया।

विहंसकर से मचल कर गिर

चपल यौवन बाल रोया।

प्रात स्मरणीय धन्या,

शत्रु को नीचा दिखाती।

संस्कृति गरिमा ना खोती

प्रेम भी मरकर निभाती।।

इस कृति में नौ देवियों के समान पवन प्रेरक नौ देवियों की गौरव गाथा चित्र की गई है आज के संक्रांति काल में दिगभ्रांत किशोर पीढ़ी को भारतीय संस्कृति एवं परंपरा से परिचित कराकर उसे सही दिशा बोध देना अत्यंत आवश्यक है।

इनमें से कृष्णा मातृभूमि के स्वाभिमान एवं कुलशील मर्यादा की रक्षा के लिए शहर से विषपान करके प्राण उत्सव करती है जबकि चंपा आतिथ्य धर्म के निर्वाह में पिता प्रताप की सहायिका बनकर अपने जीवनोत्सर्ग द्वारा उन्हें अपने प्राण पर अधिक रहने का सशक्त संबल प्रदान करती है

वागदत्ता वीरमति अपनी मातृभूमि की रक्षा में कार्ट दिखाने वाले प्राण प्रिय की छाती में झपटकर करवाल भोंक देती है और पावन प्रेम में बलिदान करते हुए कहती है,

मन से वरण कर चुकी थी मैं,

प्रायश्चित करती हूं।

चलो, चलो मैं साथ तुम्हारे,

स्वर्ग लोक चलती हूं।

वागदत्ता विद्युल्लता की बलिदानी गाथा भी बड़ी मर्मस्पर्शी है।

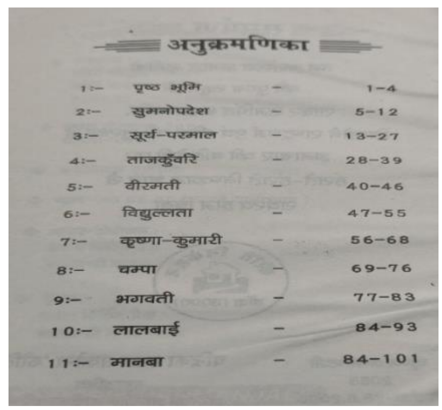
अपनी भावी पति समर के समर से भाग आने पर उसका खून खौल उठता है शत्रु से मिल जाने पर उसकी कायरता की वह बेवाक भर्त्सना करती है रूपाकर्षण के लोभी समर सिंह के कुलकलंकी हाथ को अपने ओर बढ़ते देखकर झटका हुए कहती है-

बोली छू मत देह डूब जा,

चुल्लू भर पानी में।

दाग लगा मत क्षत्राणि के,

यौवन बलिदानी में।


अनुक्रमणिका

सूर्य परमल तक कुमारी लालबाई भगवती और मानव ऐसी वरदानी हिंदू लालाएं हैं जिन्होंने अपनी अप्रतिहात सूझबूझ से विधर्मी शासको के चंगुल में फंसकर भी विषम परिस्थितियों में न केवल अपने शील और स्वधर्म की रक्षा की है, अपितु जीवन उत्सर्ग करने से पहले उनका मानमर्दन भी किया है उनके पावन तन का स्पर्श करने से पहले या तो आततायी नर पिशाच उनके तपस्तेज

से भस्मीभूत हो गया है या उन्हें जीवित ना पाकर हताशा में हाथ मलता रह गया है।

4.2 ताजमहल के आंसू

ताजमहल के आंसू कीर्ति जी की एक ऐसी स्वाभाविक अभिव्यक्ति है जिसे उनकी तीन दशक की काव्य साधना की उपलब्धि समझा जा सकता है



किमबदांती है कि ताजमहल के निर्माण में लगे प्रमुख शिल्पी के हाथ शाहजहां ने इसलिए कटवा दिए थे कि वह भविष्य में ताजमहल से श्रेष्ठ तक प्रति संसार को ना दे सके और मुमताज की अंतिम इच्छा के अनुरूप उसका मकबरा विश्व में लासानी ही बना रहे। ताजमहल के शिल्पी को यह दंड इसलिए मिला कि वह ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा का धनी था और विशुद्ध कला साधना में आत्मोत्सर्ग करने के लिए कृत संकल्प था कीर्ति जी को भी अपनी नास्तिक काव्य साधना का दंड लगभग इसी रूप में भोगना पड़ा। ताज के शिल्पी में कीर्ति जी को अपनी भोगी पीड़ा परीक्षित हो रही थी।

मारों से मुड़ूंगा नहीं, टूटूंगा झुकूंगा नहीं,

मैंने प्रतापी परिपाटी अपनाई है।

चाहे परिवार सहित काल का कलेवा बनूं,

टुकड़ों पर लेकिन ईमान नहीं बेचूंगा।

चंद्रिका प्रसाद सक्सेना जी की इस खंडकाव्य में 7 सर्गों का वर्णन किया गया है।

प्रथम सर्ग – मुमताज महल की मृत्यु: अंतिम आकांक्षा

हुए हकीम हताश प्रिया ने ।

अंतिम आंखें खोली।

धरे गोद में शीश शाह से,

व्याकुल बेगम बोली।

जहां पनाह ! कनीजिन ने,

जीवन भर प्यार निबाहा।

वही किया जो तुमने उससे,

कहा, हृदय से चाहा।

हम तुम एक रहे जीवन में,

कभी ना हिम्मत हारे।

अब ना मिलेंगे दिलकश

यमुना के रंगीन किनारे।

अपना मोर सिंहासन शासन,

शीश महल की क्रीडा।

जियो जो आते याद हृदय की,

बढ़ती जाती पीड़ा।

मृत्यु चाहती नहीं कि अब हम
साथ रहे सुख पाएं।
गई हुई सांसे वापस क्या,
पता ? लौट कर आए।

मिट्टी का शरीर मिट्टी में
मिलता कौन बचाता ?
जो यश की काया से जीता,
वही अमर कहलाता।

डूब रही जिंदगी शून्य में,
छाने लगी अंधेरी।
हे प्रियतम! अंतिम सांसों की,
यही आरजू मेरी।

मेरा स्मारक हो कुछ ऐसा,
नाम अमर हो जाए।
मृत्यु छीन कर मुझको तुमसे,
जुदा ना करने पाए।

द्वितीय सर्ग– शिल्पी का व्यक्तित्व: एवं दायित्वबोध

राजज्ञा की गई प्रसारित,
स्मारक हित न्यारी।
अनुपम कृति बनेगा अनुपम,

पुरस्कार अधिकारी।

रत्नाकर विराट विभव जो,
चाह हमसे पाए।
मुमताज महल जैसा सुंदर,
कोई मकबरा बनाए।

कल बेचने वाले शिल्पी
नित हजारों आए।
किंतु शाह की अभिलाषा की,
तुष्टि नहीं कर पाए।

जीर्ण शीर्ण थे वस्त्र घुसरित,
केश क्रिशांगी काया।
एक दिवस निर्धन सा शिल्पी,
राज भवन में आया।

बोल शिल्पी राजन! तुम हो,
कल प्रेम के ज्ञानी।
धन्य तुम्हारी रूह प्रेम की,
पीड़ा जिनसे जानी।

दो दिन में ही अपने सारे,
केश श्वेत कर डाले।
प्रिया प्रेम के विरही साधक,
तुम सम्राट ! निराले।

हे गुण ग्राही प्रीति सुधाकर!

वैभव के रत्नाकर !

मैं मुमताज महल से सुंदर,

दूंगा ताज बनाकर।

यदि तुम ऐसी रचना शिल्पी,

करके दिखलाओगे।

तो मुंहमांगा पुरस्कार,

सम्मान सहित पाओगे।

तृतीय सर्ग – ताजमहल की संरचना एवं बेगम की आत्मा की आवाज

सुंदर प्रकृति पुनीत जहां,

यमुना का सुखद किनारा।

हरे भरे उपवन का प्रांगण,

शांत सुपुष्पित प्यारा।

जहां बसंत संग नित होती,

प्रकृति नटी की क्रीड़ा।

विकल कोकिला कूक, हूक सी,

दे जाती थी पीड़ा।

हंस मिथुन यमुना की गोदी,

मेढक क्रीड़ाई करते।

सुमन गुलाबी शय्ययों के

धाराओं में तिरत।

करती लोल किलोल जोड़ियां,

जल विहार मनमानी।

जितना इत्र गुलाब गमकता,

इतनी शोख जवानी।

भोगों से जर्जरित रुग्ण थी,

मेरी नश्वर काया।

कलाकार ने मुझे शाश्वत,

दर्शन योग्य बनाया।

वैभव में यदि शाश्वत जीवन,

दायक क्षमता होती।

तो क्यों शाहजहां की बेगम,

आंसू से मुंह धोती ?

शहंशाह से कहती जिसने,

रच दी अमर निशानी।

युग युग तक जाएगी जिससे,

अपनी प्रेम कहानी।

जी प्रतिमा ने हमें आपको,

धन को अमर बनाया।

जो अपने सौंदर्य बोध से,

स्वर्ग धरा पर लाया।

चतुर्थ सर्ग – ताजमहल का उद्घाटन एवं राजा शिल्पी संवाद

ताज पूर्ण हो गया शाह ने,
देख सभी नजारे।
पच्चीकारी देख हो गए,
पूर्ण मनोरथ सारे।

द्वंद्वातीत मनोहर थी अति,
भव्य ताज की रचना।
बाहर प्रेम प्रकर्ष किंतु,
भीतर मृत्यु पर बस ना।

कीर्ति कौमुदी सुधाधार जब,
अंबर से बरसाती।
दिव्य आत्मा प्रेम भव्यता,
देख देख हर्षाती।

इतना सुंदर रूप कहां,
मुमताज महल ने पाया?
जो दे सका न राज्य कला ने,
देकर अमर बनाया।

हुआ ताज के उद्घाटन का,
बड़ा भाव आयोजन।
बैठे थे सम्भ्रांत मुसाहिब,
मंत्री जनसाधारण।

शाहजहां बोले गदगद हो,

भारी दृगो में पानी।

लो मुमताज तुम्हें अर्पित यह,

इच्छित अमर निशानी।

पंचम सर्ग – शिल्पी को क्रूर दण्ड

कहा शाह ने शिल्पी ! तुमने,

अगर न बातें मानी।

देनी होगी इसके कारण,

तुम्हें बड़ी कुर्बानी।

शासनादेश सनक में यदि तुम,

ठुकराते जाओगे।

बंदी होगे राज्य छोड़कर

भाग नहीं पाओगे।

जिन हाथों में चमत्कार है,

उनको कटवा दूंगा।

कहीं ताज सी कृति दुनिया में,

नहीं बनाने दूंगा।

राजन ! इस कुकृत्य से करते,

क्यों अपना मुंह काला ?

है तुमसे भी ऊपर कोई,

सृष्टि चलाने वाला।

मेरे हाथ कटे मैं यश में,

आगे ना बढ़ जाऊं

ताजमहल से कृति फिर जग में,

नहीं बनाने पाऊं।

मृत्युदंड हो जाता तो फिर,

इतनी पीर न खलती।

आंखें बंद होती प्रतिहिंसा,

ज्वाल न हरदम जलती।

षष्टम सर्ग – कलाकार की अंतर्वेदना: कवि से अनुरोध

जब जब शरद चंद्रिका में मैं,

ताज देखने जाता।

ऊपर बैठा कलाकार निज,

कटे हाथ दिखलाता।

दिव्य हाथ जिनने जगती में,

अनुपम ताज बनाया।

काटे गए कला को सत्ता,

ने खून से नहलाया।

मेरे साथ क्रूर राजा ने,

अत्याचार किया है।

दिव्य कल की करियित्री,

प्रतिभा को मार दिया है।

आओ निकट डरो मत देखो,

यही हाथ है मेरे।

जिनसे बिखरी सौंदर्य राशि,।

दैवी अंतस के प्रेरे।

सबसे कहता हूं जो आकर,

ताज मनोरम देखें।

बादशाह भी हो तो पहले,

मानव बनाना सीखे।

रोज यहां आया करते हैं,

प्रणय वासना वाले।

जिनके दिल में प्रेम न पीड़ा,

यौवन के मतवाले।

सप्तम सर्ग – कलाकार के अंतिम संदेश:- राजाश्रय दासता मूलक

दिन भर भड़कू कहीं शाम को,

इसी जगह आता हूं।

अपने प्यारे ताजमहल को,

छोड़ नहीं पाता हूं।

मेरा भाव वेग इसी को,

देख देख कर थमता।

प्राणों से भी अधिक मुझे है,

ताजमहल से ममता।

तुम्हें सृजन की पीड़ा कविवर,

पढ़ती होगी सहनी।

अपने अनुभव की कुछ बातें,

साथी ! तुमसे कहनी।

कोई कलाकार मत दम्भी,

राजाश्रय में भूले।

वन्य कुसुम की तरह मुक्त,

मलयानिल में ही फूले।

प्रेम यहां है स्वार्थ सिद्धि तक,

त्याज्य सत्य की बानी।

यहां कूर ही सूर विपक्षी,

सुयश बड़ी हैरानी।

यहां दासता ही संरक्षण,

नीति छंद की दासी

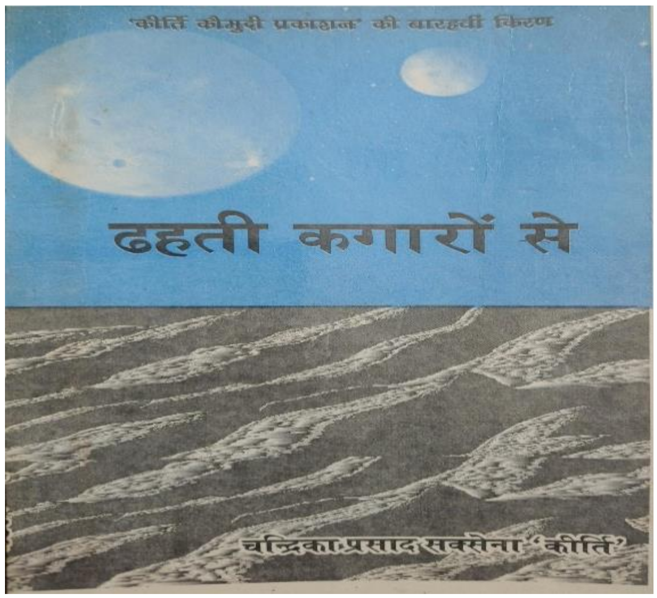
पुरस्कार चुगुलों पतितों को,

तेजस्वी को फांसी।

4.3 ढहती कगारों से

श्री चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति उन सरस्वती साधकों में से एक है जिनके हृदय में वर्तमान सामाजिक विषमता के प्रति असीम दर्द एवं आकुलता है कीर्ति जी के अंतर्मन में इस तरह का वेदनात्मक भाव जगना स्वाभाविक है क्योंकि उनके व्यक्तित्व का निर्माण पाश्चात्य भोग प्रधान मूल्य से न होकर ऐसे भारतीय शाश्वत सामाजिक मूल्यों से हुआ है जिनमें राष्ट्रीय अस्मिता एवं जन सामान्य के प्रति अगाध स्नेह का भाव है।

आज शायर हो या गांव चतुर्दीप भौतिकता की चक्र चौथ युक्त आंधी का विकराल रूप देखने को मिलता है खाने का तात्पर्य है कि समाज को जैसा बदलना है वह तो बदल ही रहा है और बदलेगा अभी पर इस बदलते स्वरूप की जो लोग अगुवाई कर रहे हैं वह समाज के लिए बहुत ही घातक है



ढहती कगारों से कीर्ति जी की इन्हीं दार्शनिक वैचारिक एवं प्रशस्त भावों की दिग्दर्शक सशक्त काव्य रचना है जिसमें सहज सुबोध शैली में गंभीर विचारों की भावनात्मक अभिव्यक्ति हुई है रचना की प्रत्येक पंक्ति अभिनव चिंतन का प्रसिद्ध द्वार खोलती चलती है। जिसमें वाणी के मधुर प्रसाद का अनवरत आस्वादन करता हुआ पाठक कहीं ऊबता नहीं है।

आज विश्व की दिशा दिशा में
छाया है मनहूस कुहासा।
जन जीवन की बोझिल तरणी,
डगमग करती घोर निराशा।

व्यक्ति व्यक्ति के राष्ट्र राष्ट्र के
मन में है मुरदार उदासी।
तन से भले प्रतीत ना हो पर,
मन है मोद रहित सन्यासी।

सब जन परिवर्तित से लगते,
लेकिन है परिवेश पुराना।
किसने छीना मानव अधरों से,
वह शांति खुशी का गाना।

बड़े राष्ट्र या बड़े व्यक्ति जो,
विश्व नियोजन के अधिकारी।
उनके चेहरे पर भी छाई,
दिख रही है क्यों अंधियारी ?

जिनके पंखे चंद्रलोक तक,
नित्य आबाद उड़ा करते हैं।
पता नहीं क्यों किस चिंता में
वे भी भग्न कुढ़ा करते हैं।

आज विश्व वन में बैठी है,
कौन कालिमा जैसी ब्याली।
जिसके भय से मुक्त मनुज का,
कोष हुआ करुणा से खाली।

4.4 जय भारत जय बांग्ला

सन 1971 में संघर्ष के दौरान लिखा गया जय भारत जय बांग्ला कीर्ति जी का ऐतिहासिक खंडकाव्य है जिसे उन्होंने तत्कालीन पत्र पत्रिकाओं आकाशवाणी के समाचारों एवं विविध पक्षों के वार्तालापों के आधार पर नित्यप्रति के घटनाक्रम पर विवेकशील दृष्टि रखते हुए अपनी राष्ट्रीय गौरव गरिमा को उजागर करने की दृष्टि से लिखा था।

इसका उद्देश्य पूर्वी पाकिस्तान के शोषण दमित जागृत जनमत को न्याय दिलाने के साथ-साथ क्रूर तानाशाही के दमन चक्र से कुचली हुई संत्रास्त लक्ष लक्ष जनता की प्राण रक्षा की गुहार को वाणी का संवेदनात्मक संबल प्रदान करके मुखबधिर विश्व के कर्ण कुहारों तक पहुंचाना भी था।

वीरांगना इंदिरा गांधी ने संयुक्त राष्ट्र संघ के दो तिहाई बहुमत से पारित प्रस्ताव को ठुकरा दिया। हिंद महासागर में आए अमेरिका के जंगी सातवें बेड़े की भी उन्होंने परवाह नहीं की और अंततः राजधानी ढाका पर भारत बांग्लादेश का विजयी ध्वज फहराकर दम ली। उसे समय कीर्ति जी ने इंदिरा जी के शक्ति रूप में अवतरित होने का प्रत्यक्ष अनुभव किया और लिखा–

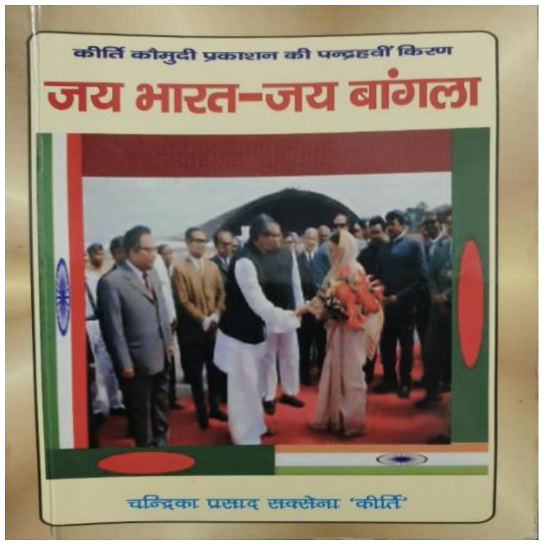
पहली बार में जो, दल बनाकर देश पर छाई।
प्रबल जनमत के बल फिर, अति सबल सरकार ले आई।
तिबारा बंगभू को मुक्ति दी, दुनिया को ठुकराकर।
लगाया इंदिरा के रूप में, शक्ति उतर आई।

इस काव्य के मुख्य पात्रों में शेख मुजीब, इंदिरा गांधी, याहिया खान, प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो, पाकिस्तान गवर्नर मालिक और सेनापति न्याजी आदि का मार्मिक

चरित्र चित्रण किया गया है शेख हसीना बेगम की वापसी और उनके सत्तारोहण तक की कथा इसमें वर्णित है

कवि ने लिखा है–

भला जो घृणा से उपजे कहां फिर शुद्ध होता है ?
हर अंगुलीमाल क्या खुद को बदलकर बुद्ध होता है ?



(प्रथम सर्ग)

प्रस्तुत रचना में पश्चिमी पाकिस्तान का पूर्वी बंगाल पर अनैतिक हिंसात्मक आचरण की प्रेरक तत्व रहा है पश्चिमी पाकिस्तान के मुसलमानों द्वारा अपने स्वधर्मियों, स्वदेशी पर ढहाए गए जुल्मों के कारण पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तान की जड़ सूखकर इतनी खोखली हो गई थी कि एक धक्के से न्याजी की 90000 फौज ने मुक्ति सेना से बिना लड़े आत्म समर्पण कर दिया।

एक वर्णन मुक्ति सेना की सुंदरी का देखिए–

न जिसके हाथ में चूड़ी, न संग बालक न बाला थी।
न जिसके शीश में सिंदूर, न गर्दन में माला थी।।
लिए थी राइफल कर में, पड़ी थी माल छाती पर।

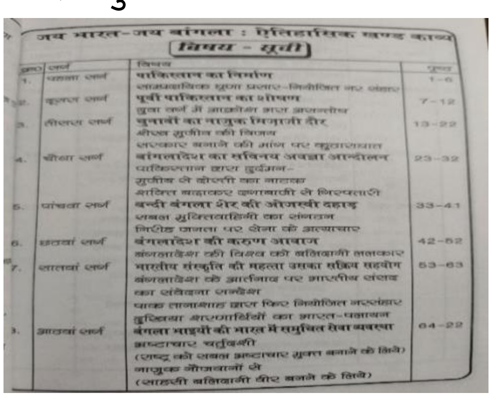
वह बांग्लादेश की नारी, बनी अब क्रांति ज्वाला थी।।

क्रांति सफल हुई न्याय की विजय के साथ हसीना बेगम पुनः बांग्लादेश की प्रधानमंत्री है अमर शहीद शेख मुजीब एवं इंदिरा गांधी के सपनों को साकार करते हुए भारत और बांग्लादेश प्रगाढ़ मैत्री के निर्वाह के लिए ह्रदय से कटिबंध है ईश्वर उन्हें आसुरी शक्तियों से लोहा लेने में समर्थ बनाएं।

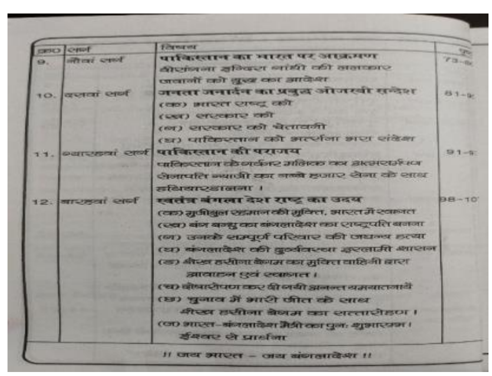
हसीना दोष मुक्त हुई, चुनावी मांग कर डाली।
शासन पर बढ़ा दबाव, कुर्सी पड़ी थी खाली।।
कराने पड़े मुक्त चुनाव, दलगत लोक जनमत से।
तीन चौथाई सीटों से, हसीना ने विजय पाली।।

शक्तिवत अवतरित हो, हसीना ने ताज फिर पाया ।
बांग्लादेश की सर्वांग - उन्नति का समय आया।।
मुजीब-इंदिरा की आंखों से स्वर्ग से आशीषे बरसी।
बांग्लादेश- भारत मैत्री का फिर समय आया ।।

परस्पर हित की मिलकर योजनाएं हम बनाएंगे।
एक दूजे की आफत में हमेशा काम आएंगे।।
समस्याएं सभी सुलझेगी वार्तालाप के द्वारा।
बांग्लादेश घुसपैठी अब अपने घर को जाएंगे।।


जय भारत-जय बांगला : ऐतिहासिक खण्ड काव्य

विषय - सूची



!! जय भारत - जय बंगलादेश !!

4.5 श्यामा

श्याम लघु काव्य साकेत श्री चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी की अविभक्त आत्मा की तड़पती अनुगुज है कविता भावनाओं के उद्वेलन से कल्पना का संबल प्राप्त कर उड़ान पर चढ़ती है यह कवि का नैसर्गिक वरदान होता है कीर्ति जी को यह वरदान सहज प्राप्त हो रहा है उनके द्वारा रचित यह काव्य उन्होंने अपनी स्वर्गीय जीवन संगिनी प्रियतम श्रीमती श्यामा कुमारी सक्सेना जी को समर्पित किया है

तेरे बिन मेरा सुना था संसार ही,

बूंद भर रस को व्याकुल तरसते रहे।

जब से श्यामा घटा उर गगन में घिरी,

गीत नवरस के छन्न छन्न बरसाते रहे।



कवि ने अपने सतत संघर्ष पूर्ण किंतु सहयोगिनी पत्नी के अटूट स्नेह अडिग विश्वास व दांपत्य प्रेम की अडोल एकतानता से समरस हुए जीवन की कुछ झलकियां वियुक्त अवस्था की मन में वेदना को रुपायित किया है मातृ पितृ विहीन पालक के संयुक्त पारिवारिक स्नेह में बढ़ते हुए कैशोर्य तत्पश्चात युवावस्था की मांगों से भरपूर जीवन जो सरल,मधुरा,त्याग में विवेकशील पत्नी श्यामा का संग पाकर हरा भरा हो उठा था, के बड़े चटकीले चित्र कवि ने इस कविता में खींचे हैं।

सक्सेना जी ने धर्म पत्नी की वेदना में जो श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं वह हर सहृदय पति के दर्द को व्यक्त करते हैं–

प्रेम का प्रसाद बांट सबको मुक्त हाथों से,
सुखदायी माता अनुरागिनी चली गई।
दया धर्म शील शर्म की प्रदीप्ति ज्योति शिखा,
भगवत कृपा की भिखारिन चली गई।
गायत्री तुलसी राम शिव की अनन्य भक्त,
माता भगवती की पुजारिन चली गई।
सींचती संवारती कीर्ति कुल के बगीचे को,
भरकर फल फूलों से मालिन चली गई।

सक्सेना जी ने श्याम के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में जो काव्यांजलि अर्पित की है वह उनके नई प्रेम की अभिव्यक्ति तो है ही साथ ही भारतीय नारी की अस्मिता आस्था सौंदर्य बहुत त्याग प्रेम करना मातृत्व सेवा ममता का भी मूल्यांकन है

नारी है शक्तिमति दुर्गा, मोहिनी भी वही,
क्रूर सिंह को भी झुका, पानी कर देती है।
उसकी हृदय सीपी में मोती है तृप्ति के,
त्याग तप नेह की अखंड दिव्य ज्योति है।
मां के आंचल की पयस्वनी धारा है वही,
वासना का ताप पाप सब हर लेती है।
सृजन विकास उत्प्रेरक तपोभूमि वही,
थोड़ा रस लेकर अनंत गुना देती है।

पंचम अध्याय

गीत संकलन

गीत संकलन का मतलब है गीतों का संग्रह गीत एक संगीत में रचना है जिसमें ले, ताल और भावों का सुंदर मिश्रण होता है। गीत में शब्दों का चयन और उनका अर्थ महत्वपूर्ण होता है, जो श्रोताओं को गहराई से छूता है। इसके अतिरिक्त गीत में भावनाओं, विचारों और कहानियों को व्यक्त करने की क्षमता होती है। जिससे यह एक शक्तिशाली कला रूप बन जाता है।

कीर्ति जी ने भी अपने कुछ गीतों के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए हैं जो निम्न है–

5.1 कृष्णम बंदे जगतगुरुम

योगेश्वर प्रभु शत-शत प्रणाम।
अच्युत अनंत निर्लिप्त ब्रह्म के,
मानवीय साकार रूप।
जनमन के अंतर्यामी विभु,
जय जगननियंतासत स्वरूप।
जय देवकीनंदन कंस निकंदन,
जय गोपाल जय राधावर।
जय भाव वस्य भगवान भव्य,
जय गोपीप्रिय जय मुरलीधर।
अनुराग मध्य विकसित विराग जय नित्य सुखद प्रतिपल प्रकाम।

योगेश्वर प्रभु शत-शत प्रणाम।।1।।

जय मीरा के गिरधर गोपाल

जय सूर संत की सफल दृष्टि।

गोलक बिहारी बृजमोहन,

जय कृपाजलद की प्रेमवृष्टि

जय द्रुपद सुता के आशा बल,

जय विदुरानी के प्रेम पुंज।

जय जय कुब्जा की पुण्य राशि,

जय रासरसिक भक्ति निकुंज।

जय मनमोहन जय विश्वेश्वर जय गुणातीत जय पूर्णकाम।

योगेश्वर प्रभु शत-शत प्रणाम।।2।।

5.2 राही! चल चल अभी दूर है

राही चल चल अभी दूर है मंजिल तेरे धाम की।

पूरा कर ले काम और फिर आशा कर विश्राम की।।

यद्यपि तेरा पथ दुर्गम है,

निपट कांटकरीर्ण है,

स्वासों का संबल थोडा है,

लक्ष्य बड़ा विस्तीर्ण है।

किंतु ज्ञात यह रहे कि जब-जब दुर्वह दुख सताते हैं।

सभी लक्ष्यदर्शी पीड़ा को, प्रिया समझ हर्षाते हैं।

युग युग तक चमका करती है धवल दीप्ति बलिदान की,

पूरा कर ले काम और फिर आशा कर विश्राम की।।

कर्मभूमि में रुक-रुक चलना

महा भयंकर पाप है

अपने लिए जगत में जीना,

पशु प्रवृत्ति की माप है।

देख तुझे निर्देश दे रहा है बापू ध्रुव तारा है।

इस साक्ष्य कर शपथ करो, शुचि मानव धर्म हमारा है।।

महावीर ! रे खोज मिलेगी, तुझे शांति की जानकी।

पूरा कर ले काम और फिर, आशा कर विश्राम की।

5.3 हिंदी की दुर्दशा

नौ जवां रे कन्हैया तेरी देवकी कंसकारा में घुटकर मरी जा रही है।

बहुत सो चुके आंख खोलो जरा, हिंद से माता हिंदी मिटी जा रही है।।

ठगों ने खिलाई थी जो गोलियां,

खून पानी बना, जोश जगने ना पाया।

कुछ हवा यों चली, कुछ दवा यों हुई,

आंख फिरती गई होश अब तक ना आया।

बीती आधीशती राज रोगी बने,

नर्स इंग्लिश ने कुलशील भी पी लिया,

ज्यों ज्यों जाती खिसकती नजर मोड कर घोर कामुक पिपासा बढ़ी जा रही है।

नौ जवां रे कन्हैया ! तेरी देवकी कंसकारा में घुटकर मरी जा रही है।।

जन्म से जिसकी सुनते रहे लोरियां,

जिसकी पलने में तुलसी सी बानी मिली।

जिसका रस रक्त मय दूध पीकर बढ़े,

यह जवानी मिली जिंदगानी मिली।

मां यशस्विनी सहित जिसकी बीसों बहिन,

तुम पर अंचल की छाया किए चल रही।

इस किरातीन के पंजे के नीचे दबी कोटी निर्दोष जनता पिसी जा रही है।

नौ जवां रे कन्हैया ! तेरी देवकी कंसकारा में घुटकर मरी जा रही है।।

चार बातें नगर की वधू से करो,

यह नई रस भरी आशिकाना ना हो।

तुम तो लेकर इस घर बसाने चले,

लाज का प्रश्न है यों दीवाना ना हो।

उम्र जिनकी कटि इसके संसर्ग मे,

राज के साज में शेष कट जायेगी।

नौजवानों तुम्हारी वही देख गति हिंदी माता की छाती फटी जा रही है।

नौ जवां रे कन्हैया ! तेरी देवकी कंसकारा में घुटकर मरी जा रही है।

बहुत सो चुके आंख खोलो कुंवर ! हिंद से माता हिंदी मिटी जा रही है।

5.4 छात्र युवा शक्ति से

उठो देश के नौजवानों ! तुम्हें अब, धरा पर नया स्वर्ग लाना पड़ेगा।

मां की दुलारे गुरुजन के प्यारे,

अरुण और जाबाल उपमन्यु हो तुम,

छत्रप शिवा के प्रतापी पिता के,

अर्जुन के रणधीर अभिमन्यु हो तुम।
शंकर की प्रतिभा दयानंद का सत्य,
गौतम की गरिमा तुम्हीं में समाई।
गांधवी के गौरव, जवाहर की आशा,
भगत सिंह, आजाद, बिस्मिल के भाई।
तुम्हें पूर्वजों से मिली जो धरोहर उसे शक्ति श्रम से बचना पड़ेगा।
उठो देश के नौजवानों ! तुम्हें अब, धरा पर नया स्वर्ग लाना पड़ेगा।।
गुरुकुल के हे ब्रह्मचारी ! छिना क्यों ?
तपस्वी मनस्वी का आसान तुम्हारा।
हुआ क्यों कलंकित विमल चंद जैसा ?
धवल नाम जग में यशस्वी तुम्हारा।
तुम्हें जन्म देकर बनी मां कलंकिन,
तुम्हें देख बहनों का अंतश है भारी।
तुम्हें देख गुरुजन का मस्तक झुका है,
तुम्हें देख हंसते सड़क के अनाड़ी।
तुम्हारी किए कृत पंकिल हुए यदि, उन्हें करके उज्जवल दिखाना पड़ेगा।
उठो देश के नौजवानों ! तुम्हें अब, धरा पर नया स्वर्ग लाना पड़ेगा।।
बढ़ो तुम लिए कामना शुभ हमारी,
तुम्हारी विजय पर हमारी बधाई।
अगर हर आए तो हिम्मत न खोना,
बिना हार किसने विजय सत्य पाई?

तुम्हारे सफल कम पुरुषार्थ से थी,
कश्मीर कन्या की निश्चित सगाई।
उसी प्रियतमा सुंदरी शांति सरला पै,
दुर्दांत दुश्मन ने नजर गडाई।
तुम्हें शत्रु का दर्प दर्पण कुचलकर, उसे मुक्त निर्भय बनाना पड़ेगा।
उठो देश के नौजवानों ! तुम्हें अब, धरा पर नया स्वर्ग लाना पड़ेगा।।

5.5 साक्षरता अभियान

जनता का जीवन विकसित हो पढ़ लिखकर शिक्षा के द्वारा।
बढ़े निरंतर घर-घर पहुंचे, साक्षरता अभियान हमारा।।
मिटे हृदय से दैन्य हताशा,
बढ़े नित नई ज्ञान पिपासा।
सजग कुशल जन-जन में उमगे,
उन्नति की उत्तम अभिलाषा।
लिखे स्वयं तकदीर कलम से, देखे अंध दृष्टि उजियारा।
बढ़े निरंतर घर-घर पहुंचे, साक्षरता अभियान हमारा।।
सेवाव्रती स्वयंसेवक दल,
जगे जगाए नूतन हलचल।
जब तक सब साक्षर ना बना ले,
पड़े ना उनको पल भर भी कल।
उपयोगी बातें पढ़ लिख कर, पाएंगे सब सुखद किनारा।
बढ़े निरंतर घर-घर पहुंचे, साक्षरता अभियान हमारा।।

लिखना पढ़ना बने प्रभावी।
यही भ्रष्ट तालों की चाबी।।
सब मिलजुलकर कर्तव्य निभाएं।
जले ज्योति जो सके ना दाबी।।
कागज की नाव पर चढ़कर नहीं मिलेगा कभी किनारा।
बढ़े निरंतर घर-घर पहुंचे, साक्षरता अभियान हमारा।।
बांचे सब किताब जीवन की,
पढ़े कहानी कविता मन की।
होरी के शोषण की गाथा,
दुर्गति भी अबोध के श्रम की।
जनदायित्व बोध से टूटेगी, दुविधा की दूषित कारा।
बढ़े निरंतर घर-घर पहुंचे, साक्षरता अभियान हमारा।।

5.6 अस्तित्व मिटाकर जीना मुझको स्वीकार नहीं

अभिनेता हूं अभिनय न करूं मैं, यह स्वीकार नहीं।
क्या भाव प्रकाशन करने का, मुझको अधिकार नहीं?
शव का श्रृंगार सजाना रे, मेरा अभिसार नहीं।
यदि मैंने विरले हंसकर, आशा को प्यार किया है
तो कितनों ने धमका कर, लोहू का घूंट पिया है।
कैसे नवीनपन मेरा, दो दिन में ही ढल जाता।
हर फूल फूलने आता, बन विवश मलिन मुरझाता।
नस नस की भरी जवानी रे, जीवन है ज्वार नहीं

शव का श्रृंगार सजाना रे, मेरा अभिसार नहीं।।1।।

जीवन वसंत में लाखों नवभाव सुमन फूलें हैं।

कर पकड़ लता का अंचल, हिंदोल सरिस झूले हैं।

हर कली चाहती जी भर, खिलकर निज रुप सजाना।

वह छोड़ ज्ञान की गरिमा, लेती केवल मुस्काना।

मेरी सुरभित सुमनावाली भी लेगी पतझार नहीं।

शव का श्रृंगार सजाना रे, मेरा अभिसार नहीं।।2।।

मैंने हारे पाई है, देकर जयहार किसी को,

पाई है दुर्वाह पीड़ा, देकर उल्लास किसी को,

यदि स्वाभिमान ही मेरे जीवन की झुब्ध हताशा।

तो हार चला मैं बाजी, यह ले लो जीवन पांसा।

अस्तित्व मिटाकर जीना रे मुझको स्वीकार नहीं।

शव श्रृंगार सजन रे मेरा अभिसार नहीं ।।3।

5.7 भारत मां की लोरी

मोरो लाल धरती की बगिया, को बसंत बन जावे।

शूलन के पलना पै झूले, भीष्म सा सो जावे।

घर गांवन से लै के तोरो,

फैले जग उजयारो।

भईया ! तू बन जाए कन्हैया,

सब अंखियन को तारो।

जा राम हमारो राज छोड़कै, सबकी पीर बंटावे।

शूलन के पलना पै झूले, भीष्म सा सो जावे।।1।।

बने सुडौल सिंह की जैसी,

तोरी कोमल काया।

तुम्हइ बरा के पेड़ सबइखां,

दईयो शीतल छाया।

मोरो भरत लाल सिंहिन पै, आपुन बल अजमावे।

शूलन के पलना पै झूले, भीष्म सा सो जावे।।2।।

मोरी अंगनइया में भईया के,

जस को बिरछा फूल।

सुख समृद्धि की डोर लगा के,

नित्य मनुजता झूले।

बिंदुला मां मदालता जैसो, मोउ में गुन आ जावे।

शूलन के पलना पै झूले, भीष्म सा सो जावे।।3।।

अर्जुन जैसो चरित प्रतापी,

अभिमन्यु जैसी बहियां।

सबके खातिर खुली रहे तोरी,

दिल की विमल किंवरिया।

कौनउ ग्रह अनिष्ट की छाया, तो पै परन न पावे।

शूलन के पलना पै झूले, भीष्म सा सो जावे।।4।

5.8 कैसे अपनी हार मान लूं?

तुमने धोखा दिया किंतु मैं, कैसे अपनी हार मान लूं?

बाहर थे तुम उज्जवल लेकिन,
मन था कंचल से भी काला।
मैंने तुमको देव समझकर,
आत्मसमर्पण ही कर डाला।
वेष बदल कर आना तेरा, ढंग था वृंदा को छलने का,
विश्वासी बन विष दिया तो कैसे, मैं इसको व्यवहार मान लूं।
तुमने धोखा दिया किंतु मैं, कैसे अपनी हार मान लूं?।।1।।
कब तक पर्दा करती तुमसे,
मेरी लज्जा बनी बधुटी।
जब तुमने परिश्रांत क्लांत,
मानवता की ही अस्मत लूटी।
वीर नहीं होते हैं कायर, भेड़ खाल में छुपे भेड़िए।
बावन बन करके छल लिया, तो कैसे मैं तेरा उपकार मान लूं?
तुमने धोखा दिया किन्तु मैं, कैसे अपनी हार मान लूं?।।2।।

5.9 होरी गीत

सखी री ! आई गई फिर होरी।
होन लगी वरजोरी।
समझ सोच कै पांव बढ़इयो,
बचै न पइहो कोरी।। सखी री !
मलकै रंग गुलाल गाल पै
भागत छोरा-छोरी।

फाग ईसुरी की सुन सुन कै
मुस्की घालें गोरी।। सखि री !
देवर भाभी पुरा परोसिन
करन लगे बरजोरी।
चूनर चोली भींज सिमट गए
छिपत न तन की चोरी।। सखि री !
अमियन पै चढ़ कूकत कोयल ।
कानि कायदा तोरी।
प्रकृति नटी ने डार डार पै
छिड़क दियो रंग घोरी।। सखि री !
रंग डारे पै फिसल न जइयो
अबै उमर है थोरी।
एक दिन खां लाज शरम सब
भाग गई मुंह मोरी।। सखि री !
सबै कुंवन में भांग परी है ।
की खां दईये खोरी।
कीर्ति कहे को बुरो न मानों
होरी है बस होरी।। सखि री !

5.10 साथी मेरा साथ न छोड़ो

साथी मेरा साथ नछोड़ो।
ससृति की उत्ताल तरंगों में,

मन की अज्ञात दिशा में,

बहे जा रहे आशा बल पर,

काली शून्य निशीथ निशा में,

तरल भावना बोझिल तरणी के माझी ! पतवार न छोड़ो।

साथी ! मेरा साथ न छोड़ो।।1।।

अपने पन से भी न सुपरिचित,

क्या जानूं मै जग के बंधन ?

उल्लासों का हृदय चितेरा,

कहां नियति के निष्ठुर क्रंदन ?

शून्य निशा के झिलमिल तारा से बेबस अरमान न तोड़ो।

साथी ! मेरा साथ न छोड़ो।।2।।

जीवन के कुसुमित भावों को,

लिए विहंसती नित्य पभाली।

सदा कल्पना के अंचल में,

जड़ जाती निशि छवि मुक्ताली,

शुष्क विचारों के मरु से, हे माली । रसमय श्रोत न मोड़ो।

साथी ! मेरा साथ न छोड़ो।।3।।

5.11 कालिंजर भूमि तुझे शत शत प्रणाम

यहां गुफा में विराजे, नीलकंठ अभिराम है।

सिर पर स्वर्ग गंगा की, शोभा ललाम है।

कालकूट पीकर यहां, शांति मिली शंकर को,

कालिंजर की भूमि तुझे शत शत प्रणाम है।

यह ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के समन्वय का विधाता है।
इस शक्ति पीठ धाम का, युग-युग से नाता है।
यहां कला की अमूल्य निधि, बिखरी हर पत्थर में,
कालिंजर खजुराहो की, कला का जन्म दाता है।

जहर नीलकंठ का, अतीव शांति दाता है।
उदारस्य विष से हृदय, कुत्सित हो जाता है।
बाहर भीतर के बीच, विष रुके शिवत्व यही,
कंठ में रुके तो शब्द, अमृत बरसाता है।

यह स्वयं भू नीलकंठ शांति स्थली पुरानी है।
मृगधारा से मुखरित, जड़ भरत की कहानी है।
यहां राम पांडव भी रहे, तपसी बनवासी बन,
उद्धारक सप्त ऋषियों का, तालों का पानी है।

यह मैथुनी सृष्टि की, आरंभिक निशानी है।
जो काल को जलादे ऐसा तीर्थ वरदानी है।
लिखी महिमा पुराणों ने, इसकी बड़ी श्रृद्धा से,
कालिंजर प्रयाग सा, असीम पुण्य दानी है।

जब कालिंजर की पुरातत्व महिमा निखर जायेगी।
देश देश की पर्यटक टीम, दर्शन को आएगी।
होगा गौरव मंडित, नीलकंठेश्वर धरा धाम,
तब 'कीर्ति ध्वजा' बांदा की जग में फहराएगी।

5.12 मेरा कुछ भी शेष नहीं

प्रिये ! तुम्हारे मिलन मार्ग में मेरा कुछ भी शेष नहीं है।

भाव सुमन सब मसल मसल कर,

मदिर स्नेह निकल चुका हूं।

प्रकट प्रतीक्षा सांध्य किरण बन,

उर उद्‌वेग सम्हाल चुका हूं।

मुझे तुम्हारी सुधा तरंगिणी

रूप माधुरी का दर्शन प्रिय,

मैं तब स्मृति पंछी रंगिणी!

उर कोटर में पाल चुका हूं।

कोटि-कोटि कल कंठ काकिली की, चिरविलसित स्वर बाले।

हृदय हार कर बना पुजारी, स्वात्वों का लवलेश नहीं है।।

प्रिये तुम्हारे मिलन मार्ग में।।1।।

परिवर्तन के सचल क्रोंन में,

दिवा निशा करते अठखेली।

सबका जीवन खेल बना है,

मुझे बना है जटिल पहेली।

आशाओं के दीप मनोहर,

शीतलता की ज्योति बने कब?

अग्नि शिखा को प्रणय समझकर

जलन ज्वाल पर करवट ले ली।

अब ना संभलता इन हाथों से, सुमुखी ! भार बेबस जीवन का,

प्राणों की स्फूरण शक्ति तू, मेरा कुछ अवशेष नहीं है।

प्रिये तुम्हारे मिलन मार्ग में।।2।।

5.13 हार बनाने वाला हूं

नवभाव सुमन तुम दे दो प्रिय ! मैं हार बनाने वाला हूं।

मेरा ईश्वर दिन बंधु है,

नहीं स्वर्ग सुख का वासी।

इन दुखियों की डगर-डगर में,

रमता मेरा अविनाशी।

मेरा काबा मेरी काशी, दीन दरिद्रों की सेवा,

जो प्रेम करें प्रतिदान ना चाहे, उस छवि का मतवाला हूं

नवभाव सुमन तुम दे दो प्रिय ! मैं हार बनाने वाला हूं।।1।।

सकुची कलियों के अवगूंथन का

मैं न कभी चिंतन करता।

रूप भरी मादक सुमनावली

पर बे मौत नहीं मरता।

मेरी हस्ती सस्ती लेकिन, महंगे स्वर्णिम तार मेरे,

जो प्रेम मुझे देखकर खिल जाए, मैं उसे चाहने वाला हूं।

नवभाव सुमन तुम दे दो प्रिय ! मैं हार बनाने वाला हूं।।2।।

ज्ञान और विज्ञान गहनतम,

कब मेरे घर में आए?

तर्कों की नीरस उलझन में,

प्राण कहां कब मुस्काये ?

मैं कवि हूं मेरी वाणी में, बसती रस की मादकता,

जिसकी प्रतिलहर स्वभाव बने, मैं वही प्रेम की हाला हूं।

नवभाव सुमन तुम दे दो प्रिय ! मैं हार बनाने वाला हूं।।3।।

5.14 सृष्टि नई संसार नया है

नए गीत है नए-नए स्वर तन्त्री का हर तार नया है।

मेरी नीलम नई दृष्टि की, सृष्टि नई संसार नया है ।

अपनी गति का अपनी लय का,

जैसे कोई गान अकेला।

अपनेपन का अपने मन का,

मैं अजीब इंसान अकेला।

सुनता हूं आगे बढ़ने पर,

महा अगम मझधार मिलेगा,

तुम चाहे पागल समझो पर,

मुझको दृढ़ आधार मिलेगा।

नई नाव पतवार नई है मांझी का सब साज नया है।

मेरी नीलम नई दृष्टि की, सृष्टि नई संसार नया है।।1।।

अपनी बस्ती का मैं कायल,

एक न बंधन मान सकूंगा।

मत बांधो स्वर्णिम पिंजरे में,

मैं वह पक्षी गा ना सकूंगा।

पलकों के मोती चुन चुन कर,

मानस स्थल के बीच छुपाए।

पीड़ा पीकर सुमन बेली पर,

गीतों के मधुमास सजाए।

नए जोश के नए गीत की, पीर नई है प्यार नया है।

मेरी नीलम नई दृष्टि की, सृष्टि नई संसार नया है।।2।।

पूंजी के शोषण के गढ़ में,

मानवता की बनी जेल है।

हम युवकों को बंद खोलना,

या मिट जाना हंसी खेल है।

विषम भूमि में अब न शक्ति के,

दानव का व्यापार हंसेगा।

आजादी के मुक्ति द्वार पर,

समता का संसार बसेरा।

नई वेदना नई चेतना, वाणी का श्रृंगार नया है।

मेरी नीलम नई दृष्टि की, सृष्टि नई संसार नया है।।3।।

5.15 मेरा अब तक गांव ना आया

शून्य दिशा में उड़ते उड़ते पंखों ने विश्राम न पाया।

मेरा अब तक गांव ना आया।

कितनी सरस बहारे बीती,

बीत गए युग दिल बहलाते।
श्रोताओं ने आंख मूंद लीं,
डूब गए हम गाते-गाते।
सबको अपने मिले स्नेही मिली ना हमको दृगचल छाया।
मेरा अब तक गांव ना आया।।1।।
मैंने लक्ष्य भेद के हित में,
प्रियतम से प्रिय रिश्ते तोड़े।
सुख सुविधा की ओर पीठ दे,
मोड दिए सब मन के घोड़े।
कुंवारी रही कीर्ति की दुल्हन मिली न यशमय वर की काया।
मेरा अब तक गांव ना आया।।2।।
ऊंच नीचे के पर्वत देखें,
देखी वर्ग भेद की खाई।
स्वार्थ सिंधु की लहरें देखी,
ताड़ दूर से दिए दिखाई।
ममता की चोंचों से निर्मित, प्रियतम नीड़ नहीं नियराया।
मेरा अब तक गांव ना आया।।3।।
सुनता हूं इन बाजारों में,
खोटे सिक्के चल जाते हैं।
और कभी गैरों के धोखे,
सच्चे साथी मिल जाते हैं।

स्वार्थ सिद्धि की चहल-पहल मे, अपनों को पहचान ना पाया।
मेरा आपका गांव ना आया।।4।।

5.16 आओ! तुमको गीत सुनायें

थके पथिक कुछ तो सुस्ता लो, आओ ! तुमको गीत सुनायें
रंग बिरंगी स्वप्निल छलना,
यह दुनिया मदिरा की प्याली।
जितनी हम सोचा करते कब,
मिलती जीवन को हरियाली?
आओ ! तुमको उठा प्यार से, इस धरती से स्वर्ग दिखाएं।
थके पथिक कुछ तो सुस्ता लो, आओ ! तुमको गीत सुनायें।।1।।
यहां घूमती दिशा-दिशा में,
चिर अतृप्ति की काली छाया।
बहुपाश से प्राण खींचती
विषकन्या सी मोहक माया,
तुमको अमृत मंत्र सुनाकर, फिर से नवजीवन दे जाएं।
थके पथिक कुछ तो सुस्ता लो, आओ ! तुमको गीत सुनायें।।2।।
नहीं मिला करती अकुलाएं।
हर अंतस को शीतल छाया।
किसी किसी को धूप सुनहली,
कुछ ने बस अंधियारा पाया।
तुम सुख से सो सको प्रेम से, हम थपकी दे लोरी गाएं।

थके पथिक कुछ तो सुस्ता लो, आओ ! तुमको गीत सुनायें।।3।।

5.17 प्रेम का दो दिन बसेरा

रूप के उद्यान में बस प्रेम का दो दिन बसेरा।

आश दीपक दो छुपाए,

फहरता रससिक्त अंचल।

मदिर दृग मृदुहास पीकर,

हो चले गतिशील चंचल।।

क्या मिलेगा मचलती अंगड़ाइयों का मूल्य पगली?

खिलखिला कर छीन लेगा जब निशा निश्चर सवेरा।

रूप के उद्यान में बस, प्रेम का दो दिन बसेरा।।1।।

हृदय की नित मर्म पीड़ा,

कल्पना के पर लगाए।

आंसुओं के मिस सजीली,

मुक्तमाला सी सजाये।

इस अभागी लाज का फिर, क्या सफल साम्राज्य मानिनी।

भावना जब कह उठेगी हो चुका अवसान मेरा।

थके पथिक कुछ तो सुस्ता लो, आओ ! तुमको गीत सुनायें।।2।।

अर्चना अर्पित कुसुम की,

दो क्षणों की नौजवानी ।

कह रहे रवि कर सुनो,

नव तारिका की मूक वाणी।

सिसकते अरमान खोकर वह चली निर्मम पिया घर।
क्रूर संस्कृति की यही गति, कौन मेरा कौन तेरा?
रूप के उद्यान में बस प्रेम का दो दिन बसेरा।।3।।

युगल कर से तू लुटाती,
जा रही उन्माद रंगनी।
छलकती सी जा रही है
मानसागर की तरंगिन।

मिटेगा अपनत्व बेबस, क्षीण रेखा के विलय सा,
मिलन का संतोष दे जब, लुटता यौवन अंधेरा ।
रूप के उद्यान में बस, प्रेम का दो दिन बसेरा।।4।।

5.18 आश बन विश्वास जाए

आश बन विश्वास जाए।
पक्ष हीना प्राण पक्षी,
थे विरह सरिता किनारे।
अश्रु धारा की लहर में,
जा गिरे बेबस बेचारे

आश तृण आश्रित बहे, आगे अगम मझधार भीषण,
प्रभु ! अबल असहाय नारी, अब तरे या डूब जाए।
आश बन विश्वास जाए।।1।।

प्रेम की पावन पुजारिन ,
मैं न प्रियत्यकता कहाऊँ ।

मातृभू फट जा तुम्हारे

अंक में मैं ना समाऊँ।

बुद्धि चंचल गति अचंचल, मैं पसाऊँ विलख अंचल

विकल वाणी प्रियमिलन के, या मरण के गीत गाए।

आश बन विश्वास जाए।।2।।

याद या फरियाद में

निशिदिन तड़पते प्राण मेरे।

निंदनीय जगविदग्धा,

मैं न पाती मार्ग तेरे।

विस्मृत नहीं वे स्वर्ण सपने, मैं उन्हीं की आशा जीवित

यह हृदय दो टुक हो अब या हृदय की प्यास जाए।

आश बन विश्वास जाए।।3।।

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी का शैक्षिक योगदान के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं -

- कीर्ति जी का बचपन ग्रामीण परिवेश में व्यतीत होने की वजह से ग्रामीण जीवन के पल-पल संघर्षों, प्राकृतिक सौंदर्य,नदी,खेत,फसल,किसान,मजदूर, पेड़,पहाड़ को जाना समझना और अनुभूत किया। जिसकी झलक उनकी काव्य रचनाओं में दिखाई देती है।
- घर की परिस्थितियां ठीक ना होने के कारण मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने पढ़ने के साथ-साथ पढ़ाकर अपनी इंटर तक की पढ़ाई पूरी की।
- इन्होंने अपना अध्यापन कार्य राजकीय इंटर कॉलेज अल्मोड़ा से शुरू किया, और 1991 में राजकीय इंटर कॉलेज तिंदवारा से अपने अध्यापन कार्य से सेवानिवृत्त हो गए।
- कीर्ति जी ने अपने जीवन काल में उत्तराखंड, दिल्ली, बनारस, लखनऊ इत्यादि देश के विभिन्न स्थानों की यात्रा की।
- चंद्रिका प्रसाद सक्सेना ‘कीर्ति’ जी सामाजिक सरोकारों के प्रति चेतन एवं संवेदनशील कवि थे। उनका हृदय छल छिद्र से दूर सहजता में रमता है। उनके इसी स्वभाव का परिचय उनकी कविताओं में मिलता है।

- कीर्ति जी वर्ष 1999 में सेवानिवृत्त हो जाने के बाद पूरी तरीके से साहित्य के क्षेत्र में उतर गए और किताबों में अपने मन के भावों को शब्दों का रूप से डाला।
- चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी कवि सम्मेलन एवं कवि गोष्ठी में सहभागिता करके अपने काव्य की छटा बिखेरते रहते थे।
- चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी ने अपनी रचनाओं से हिंदी साहित्य की प्रगतिशील धारा को समृद्ध किया।
- कीर्ति जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकार थे।
- कीर्ति जी ने विद्यार्थी एवं जन सामान्य के लिए अनेक प्रेरक गीतों की रचना की।

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी शोध अध्ययन के निष्कर्ष की सार्थकता उसके शैक्षिक उपादेयता पर निर्भर है शैक्षिक निहितार्थ न होने पर शोध कार्य की कोई उपयोगिता सिद्ध नहीं होती है जिससे अमूल्य समय एवं धन की हानि ही नहीं होती, बल्कि राष्ट्र को भी उसका लाभ प्राप्त नहीं हो पता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं –

विद्यार्थियों के लिए–

- जिस प्रकार कीर्ति जी ने ग्रामीण परिवेश में अपना जीवन व्यतीत करते हुए ग्रामीण जीवन को अनुभूत किया। उसी प्रकार विद्यार्थियों को भी अपने परिवेश को गहराई से समझ कर अपने जीवन में आत्मसात कर उसको अपने भावी जीवन में उपयोग कर सार्थक बनाना चाहिए।
- कीर्ति जी के जीवन से विद्यार्थियों को प्रेरणा लेनी चाहिए कि जीवन में कितने भी अभाव, कठिनाई, गरीबी इत्यादि के बाद भी लगन परिश्रम एवम दृढ़ संकल्प से उच्च शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

- कीर्ति जी की सेवायोजना यात्रा से विद्यार्थियों को यह सीख मिलती है कि अध्ययन यात्रा पूर्ण होने पर किसी भी सेवायोजन से भले ही वह कितना भी छोटा एवं अस्थाई प्रकृति का ही क्यों ना हो जो जाना चाहिए तथा उसमें रहते हुए निरंतर उन्नति का प्रयास करना चाहिए। एक न एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी।
- जिस प्रकार कीर्ति जी अपना शांत स्वभाव रखते हुए तथा आने वाले कठिनाइयों का सामना करते हुए अपना काम करते रहे, उसी प्रकार विद्यार्थियों को भी किसी भी कर्मरत रहते हुए अपने मूल स्वभाव को नहीं छोड़ना चाहिए और हर प्रकार की परिस्थिति से सामंजस्य बैठाकर कर निरंतर उन्नति का प्रयास करते रहना चाहिए।
- विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थियों को किसान की भांति कर्मयोगी, थकान रहित, परिश्रम करते हुए अध्ययन के दौरान आने वाली विभिन्न कठिनाइयों को अपने जीवन का अंग मानते हुए, अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। अपने काम के साथ कुछ समय के लिए हमें प्रकृति का भी आनंद लेना चाहिए, क्योंकि प्रकृति ही वह शक्ति है, जो हमें इस विश्व में सब कुछ प्रदान करती है।
- प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में जब भी अवसर मिले भ्रमण एवं यात्रा पर जाना चाहिए। इससे हमें देश की सभ्यता एवं संस्कृति को निकट से जानने का अवसर मिलता है। हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों का देश है। अनेकता में एकता एवं वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन हमें यात्राओं के दौरान मिलते हैं। विद्यालय द्वारा प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों को दूर-दराज भ्रमण हेतु ले जाना चाहिए।
- शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हिंदी के पाठ पुस्तकों में कीर्ति जी के प्रेरक गीतों को सम्मिलित किया जा सकता है। ताकि विद्यार्थी बुंदेलखंड के प्रसिद्ध कवि की

लेखनी से परिचित हो सके तथा उनके काम की अभिव्यक्त संवेदनाओं को आत्मसात कर सके।

अभिभावकों के लिए–

- जिस प्रकार कीर्ति जी ने अपने जीवन में अनेक पुरस्कार प्राप्त कर देश में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई, उसी प्रकार अभिभावकों को भी किसी भी क्षेत्र विशेष की ऊंचाइयों को प्राप्त कर पुरस्कृत होकर अपने घर परिवार, समाज व देश का नाम रोशन करना चाहिए।
- जिस प्रकार कीर्ति जी ने अनेक काव्य संग्रह को देकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है उसी प्रकार अभिभावकों को भी अपने जीवन में किसी विशेष क्षेत्र विशेष में अपना विशेष योगदान करने का प्रयत्न करना चाहिए।

समाज के लिए –

- प्रायः सेवानिवृत्ति के पश्चात व्यक्ति निष्क्रीय हो जाता है, किंतु कीर्ति जी ने स्वयं को साहित्य लेखन की साधना में डुबो दिया। समाज के लोगों को भी इससे प्रेरणा लेकर आजीवन कुछ ना कुछ उपयोगी करते रहना चाहिए।
- कीर्ति जी की जीवन से प्रेरणा लेकर नागरिकों को भी अपने अंदर विभिन्न गुणों का विकास करना चाहिए और विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेकर समाज एवं राष्ट्र को लाभान्वित करना चाहिए।
- समाज के सभी नागरिकों को भी कवि की भावना के अनुरूप परोपकारी साफ-स्वच्छ नियति वाला स्वार्थी निष्कलंक सच्चरित्र जैसे गुणों से युक्त इंसान बनने का प्रयास करना चाहिए इसी में देश समाज का कल्याण निहित है।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी का शैक्षिक योगदान से प्राप्त निष्कर्ष आधार पर हम कह सकते हैं कि अध्ययन शिक्षा के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी महती उपयोगिता रखता है वर्तमान सामाजिक परिवेश में जब मानवीय मूल्य और प्राचीन भारतीय संस्कृति केवल किताबों में सिमट कर रह गए हैं छात्र अति भौतिकवादी परिवेश में पश्चात संस्कृति के अंधानुकरण के कारण अपने सदाचार और संस्कारों को विस्मृत करते जा रहे हैं तब इस संक्रमण काल में छात्रों के आधारभूत मूल्यों और संस्कारो तथा नैतिकता को समाविष्ट करने में यह लघु शोध प्रभावी सिद्ध होगा। जहां पर शिक्षा और साहित्य दोनों का समावेश हो जाता है, वहां पर प्रकृति के सारे मार्ग प्रशस्त एवं दृष्टिगोचर होते हैं।

चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी का अटूट विश्वास है कि आध्यात्मिक, सांस्कृतिक सामान्य से शिक्षा 21वीं शताब्दी में अपने नवीन आदर्श स्थापित करेगी तथा मानवीय मूल्य केवल पुस्तकों तक सीमित न रहकर बालकों में संस्कार रूप में दृष्टिगोचर होंगे। लघु शोध प्रबंध में शिक्षा एवं साहित्य को एक ही सिक्के के दो पहलू बताया गया। जो समाज में प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार हेतु तथा भावी आदर्श नागरिकों के निर्माण हेतु आधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन संस्कृति शिक्षा को समन्वित कर प्रदान करके हम स्वस्थ एवं शैक्षिक समाज का निर्माण कर सकते हैं।

6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

- भावी शोध में कीर्ति जी की कविताओं में निहित मूल्य का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी समझ में बुंदेलखंड के अन्य कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है

- भावी शोध में कवि के साथ अन्य समकालीन कवियों का शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- कीर्ति जी के सामाजिक एवं अन्य शैक्षिक गतिविधियों पर भावी शोध किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन हिंदी भाषा के प्रसिद्ध कवि कीर्ति जी के शैक्षिक योगदान पर आधारित है भावी शोध में हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषा के कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कुमार, अजीत (2002)। *केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन।* शोध-प्रबंध। बुंदेलखंड विश्वविद्याल, झांसी।

कुमार, अंकित (2022)। *डॉ. गया प्रसाद स्नेही का शैक्षिक योगदान।* पी-एच. डी. शोध-प्रबंध। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।

कुमार, अशोक (2022)। *रामावतार साहू जी का शैक्षिक योगदान।* लघु शोध-प्रबंध। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी। https://archive.org/details/97893590/62457/

प्रकाश, ज्ञान (2023)। केशव तिवारी जी के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन। लघु शोध-प्रबंध। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी। https://archive.org/details/202409/

सिंह, किरन (2008)। *रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक योगदान का वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता आलोचनात्मक अध्ययन।* लघु शोध-प्रबंध। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी। https://hdl.handle.net/10603/178440>

सिंह, नीलम (1999)। *भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान वर्तमान समय में उपादेयता का अध्ययन।* पी-एच. डी. शोध-प्रबंध। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।

सिंह, रेनू (2008)। *भारत में छत्रपति शाहूजी जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में।*पी-एच.डी. शोध-प्रबंध। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी। https://hdl.handle.net/10603/12262/

शादाब, आबी (2009)। *जाकिर हुसैन एवं ए०पी०जे० अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन* । पी-एच.डी. शोध-प्रबंध। डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)।

https://hdl.handle.net/10603/235529

शर्मा, शशिकांत (2007)। *गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन*। पी-एच.डी. शोध-प्रबंध। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।

https://hdl.handle.net/10603/12530/

शर्मा, सुनीता (2022)। *स्वामी रामसुखदास जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान में प्रासंगिकता*। शिक्षा संकाय, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, राजस्थान।

https://hdl.handle.net/10603/480381/

वर्मा, रामनिवास (2005)। *भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में स्वामी शिवानंद जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता उत्थान में अध्ययन*। पी-एच.डी. शोध-प्रबंध। डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा (उ०प्र०)।

https://hdl.handle.net/10603/361860/

अग्रवाल, जे. सी. (2010)। *भारत में शिक्षा का विकास*। कोंसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।

कोठारी, सी. आर. (2004)। *अनुसंधान क्रियाविधि: विधियाँ और तकनीकें*। न्यू एज इंटरनेशनल।

शर्मा, राम नाथ (2002)। *भारतीय समाज: मुद्दे और समस्याएं*। अटलांटिक पब्लिशर्स।

सिंह, योगेन्द्र (1973)। *आधुनिक भारत में आधुनिकीकरण*। थॉमसन प्रेस।

श्रीवास्तव, ए. के. (2013)। *भारत में शैक्षिक मनोविज्ञान*। शारदा पुस्तक भवन।

थपर, रोमिला (2002)। *भारत का प्रारंभिक इतिहास*। पेंगुइन बुक्स।

भारत सरकार (2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। शिक्षा मंत्रालय।

कश्यप, पी. (2018)। *भारत में शैक्षिक प्रशासन*। पियर्सन इंडिया।

कौल, जे. एन. (2006)। *उच्च शिक्षा में शासन: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य*। कोंसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।

सक्सेना, चंद्रिका प्रसाद (2005)। *श्यामा*। बांदा: कीर्ति कौमुदी प्रकाशन।

सक्सेना, चंद्रिका प्रसाद (2006)। *किशोरी कुसुमांजलि*। बांदा: कीर्ति कौमुदी प्रकाशन।

सक्सेना, चंद्रिका प्रसाद (2006)। ढहती कगारों से। बांदा: कीर्ति कौमुदी प्रकाशन।

सक्सेना, चंद्रिका प्रसाद (2005)। *ताजमहल के आंसू।* उत्तरांचल: आरती प्रकाशन ट्रस्ट।

सक्सेना, चंद्रिका प्रसाद (2007)। *कीर्ति लता।* बांदा: कीर्ति कौमुदी प्रकाशन।

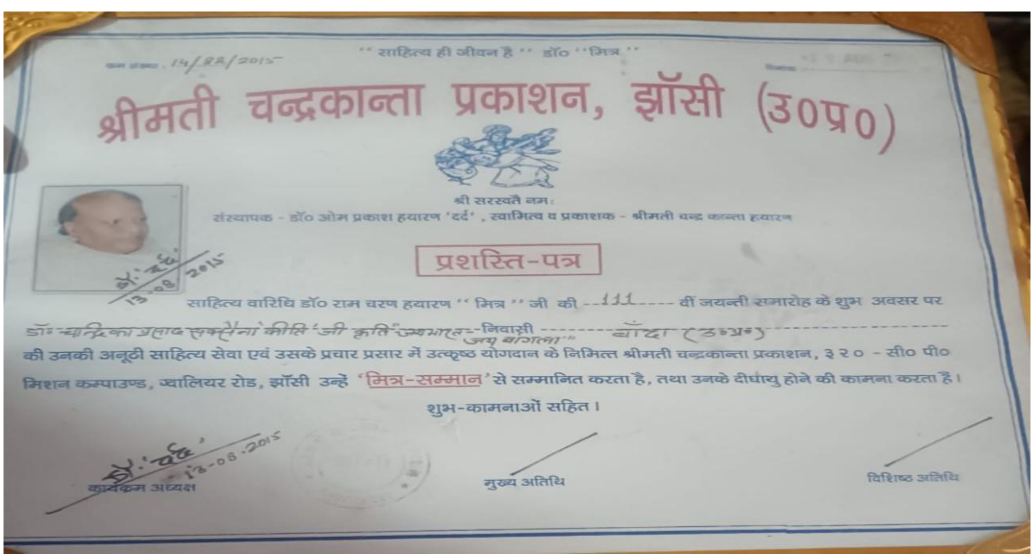
सक्सेना, चंद्रिका प्रसाद (2015)। *जय भारत जय बांग्ला।* बांदा: कीर्ति कौमुदी प्रकाशन।

परिशिष्ट ब

चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी द्वारा संपादित पुस्तकों का अनावरण बांदा के कुछ विद्वान कवियों द्वारा किया गया।



साहित्य वर्दी डॉक्टर रामचरण हरियाणा मित्र जी की 111 जयंती समारोह के शुभ अवसर पर डॉक्टर चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी को उनकी कृति जय भारत जय बांग्ला की अनूठी साहित्य सेवा एवं उसके प्रचार प्रसार में उत्कृष्ट योगदान के लिए चंद्रकांता प्रशासन द्वारा उन्हें मित्र सम्मान से सम्मानित किया गया। चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी को कुछ सम्मान और भी प्राप्त हुए जिनका विवरण निम्न प्रकार है



14/88/2015

'' साहित्य ही जीवन है '' डॉ० ''मित्र ''

श्रीमती चन्द्रकान्ता प्रकाशन, झाँसी (उ०प्र०)

श्री सरस्वतै नम:

संस्थापक - डॉ० ओम प्रकाश हयारण 'दर्द' , स्वामित्व व प्रकाशक - श्रीमती चन्द्र कान्ता हयारण

प्रशस्ति-पत्र

साहित्य वारिधि डॉ० राम चरण हयारण '' मित्र '' जी की --111---- वीं जयन्ती समारोह के शुभ अवसर पर

डॉ० चन्द्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति 'जी कृति' जयभारत जय बांगला'' निवासी -------- बाँदा (उ०प्र०) -----------

की उनकी अनूठी साहित्य सेवा एवं उसके प्रचार प्रसार में उत्कृष्ठ योगदान के निमित्त श्रीमती चन्द्रकान्ता प्रकाशन, ३२० - सी० पी० मिशन कम्पाउण्ड, ग्वालियर रोड, झाँसी उन्हें 'मित्र-सम्मान' से सम्मानित करता है, तथा उनके दीर्घायु होने की कामना करता है।

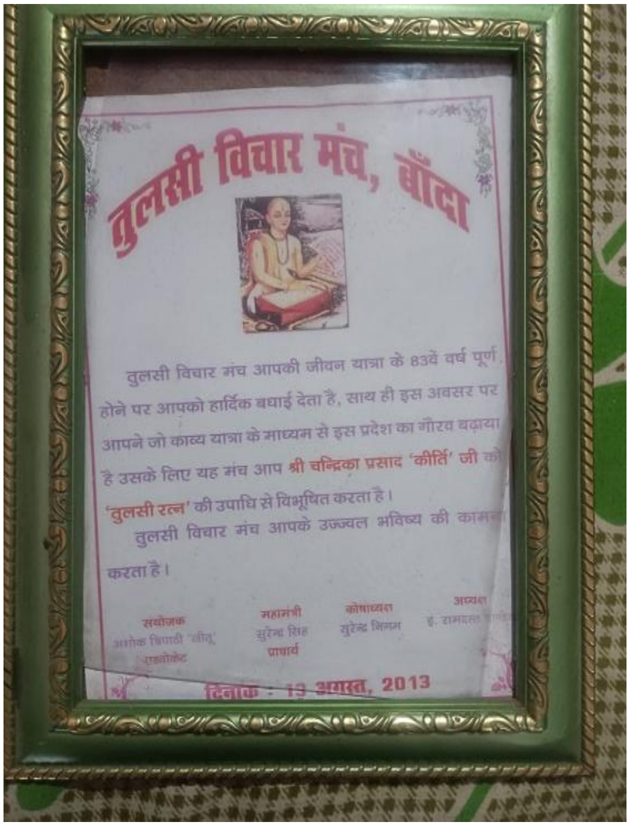
शुभ-कामनाओं सहित।

डॉ॰ 'दर्द' 13-08-2015

कार्यक्रम अध्यक्ष

मुख्य अतिथि

विशिष्ठ अतिथि



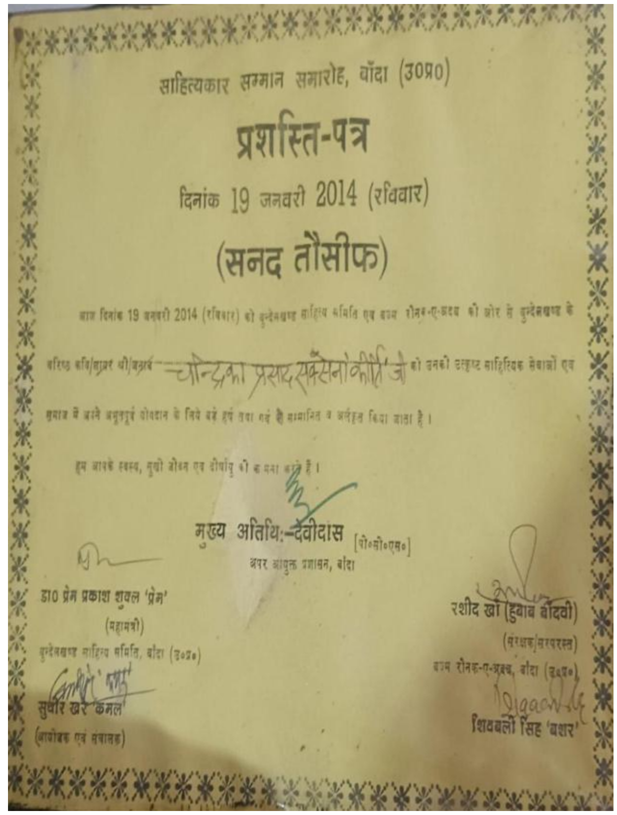
तुलसी विचार मंच, बाँदा

तुलसी विचार मंच आपकी जीवन यात्रा के 83वें वर्ष पूर्ण होने पर आपको हार्दिक बधाई देता है, साथ ही इस अवसर पर आपने जो काव्य यात्रा के माध्यम से इस प्रदेश का गौरव बढ़ाया है उसके लिए यह मंच आप **श्री चन्द्रिका प्रसाद 'कीर्ति' जी** को **'तुलसी रत्न'** की उपाधि से विभूषित करता है।

तुलसी विचार मंच आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

संयोजक	महामंत्री	कोषाध्यक्ष	अध्यक्ष
अशोक त्रिपाठी 'जीतू' एडवोकेट	सुरेन्द्र सिंह प्राचार्य	सुरेन्द्र निगम	इं. रामदत्त [illegible]

दिनांक : 19 अगस्त, 2013



साहित्यकार सम्मान समारोह, बाँदा (उ0प्र0)

प्रशस्ति-पत्र

दिनांक 19 जनवरी 2014 (रविवार)

(सनद तौसीफ)

आज दिनांक 19 जनवरी 2014 (रविवार) को बुन्देलखण्ड साहित्य समिति एवं बज्म रौनक-ए-अदब की ओर से बुन्देलखण्ड के वरिष्ठ कवि/शायर श्री/जनाब चन्द्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' जी को उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक सेवाओं एवं समाज में अपने अभूतपूर्व योगदान के लिये बड़े हर्ष तथा गर्व से सम्मानित व अलंकृत किया जाता है।

हम आपके स्वस्थ, सुखी जीवन एवं दीर्घायु की कामना करते हैं।

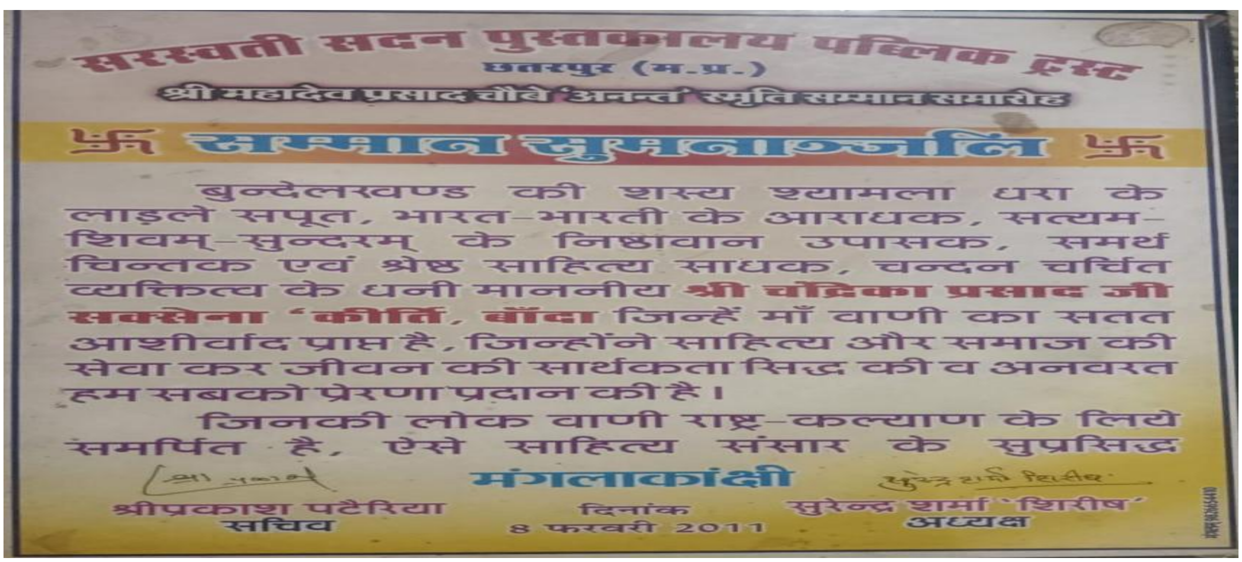
मुख्य अतिथि:- देवीदास [पी०सी०एस०]
अपर आयुक्त प्रशासन, बाँदा

डा0 प्रेम प्रकाश शुक्ल 'प्रेम'
(महामंत्री)
बुन्देलखण्ड साहित्य समिति, बाँदा (उ०प्र०)

रशीद खाँ (हुबाब बाँदवी)
(संरक्षक/सरपरस्त)
बज्म रौनक-ए-अदब, बाँदा (उ०प्र०)

सुधीर खरे 'कमल'
(आयोजक एवं संचालक)

शिवबली सिंह 'बशर'



सरस्वती सदन पुस्तकालय पब्लिक ट्रस्ट

छतरपुर (म.प्र.)

श्री महादेव प्रसाद चौबे 'अनन्त' स्मृति सम्मान समारोह

सम्मान सुमनाञ्जलि

बुन्देलखण्ड की शस्य श्यामला धरा के लाड़ले सपूत, भारत-भारती के आराधक, सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् के निष्ठावान उपासक, समर्थ चिन्तक एवं श्रेष्ठ साहित्य साधक, चन्दन चर्चित व्यक्तित्व के धनी माननीय **श्री चंद्रिका प्रसाद जी सक्सेना 'कीर्ति', बाँदा** जिन्हें माँ वाणी का सतत आशीर्वाद प्राप्त है, जिन्होंने साहित्य और समाज की सेवा कर जीवन की सार्थकता सिद्ध की व अनवरत हम सबको प्रेरणा प्रदान की है।

जिनकी लोक वाणी राष्ट्र-कल्याण के लिये समर्पित है, ऐसे साहित्य संसार के सुप्रसिद्ध

मंगलाकांक्षी

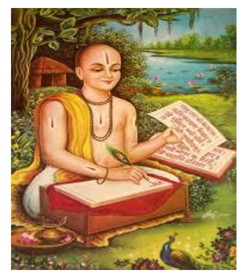
श्रीप्रकाश पटैरिया सचिव	दिनांक 8 फरवरी 2011	सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष' अध्यक्ष

परिशिष्ट अ

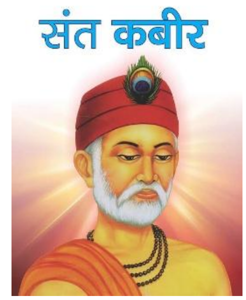
हिंदी के प्रमुख कवि

हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं उनकी रचनाएँ आधुनिक काल के कवि और उनकी रचनाएँ हिंदी के प्रसिद्ध लेखक एवं उनकी रचनाएँ –

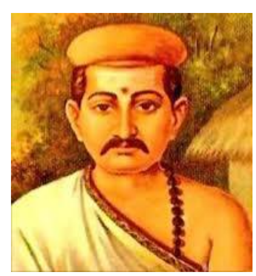
- **चंद्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति'**– ताजमहल के आंसू, जय भारत जय बांग्ला, श्यामा
- **केदारनाथ अग्रवाल–** युग की गंगा, नींद के बादल, लोक और आलोक, फूल नहीं रंग बोलते हैं।



- **तुलसीदास**– रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली
- **नरपति नाल्ह–** वीसलदेव रासो
- **कबीरदास–** सबद, रमैनी

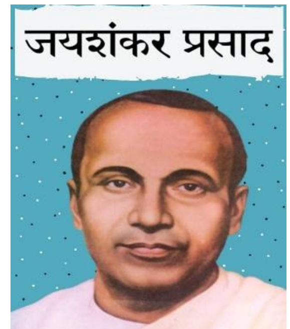


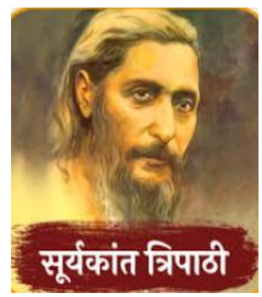
- **सूरदास–** सूरसागर, सूरजायसी, पद्मावत, साहित्य लहरी, सुरसारावली, अखरावट
- **बिहारी–** बिहारी सतसई
- **केशवदास–** रामचंद्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रिया, विज्ञानगीता

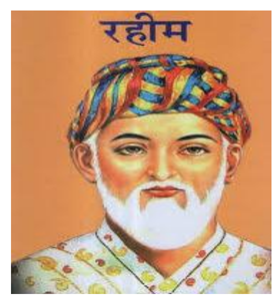


- **मीराबाई–** रामगोविंद, गीतगोविंद, राज सोरठ के पद, नरसीजी का मेहरा
- **रामनरेश त्रिपाठी–** पथिक, मानसी, मिलन और स्वप्न, ग्राम्य गीत
- **भारतेंदु हरिश्चंद्र–** श्रृंगार लहरी, प्रेमफुलवारी, प्रेमप्रलाप
- **जयशंकर प्रसाद–** कामायनी, आंसू, कामना, झरना, विशाख, आकाशदीप, तितली
- **मैथिली शरणगुप्त–** साकेत, यशोधरा, पंचवटी, भारत भारती, द्वापर
- **सुमित्रानंदन पंत–** कला और बूढ़ा चांद, चिदंबरा, तारा पाथ
- **सूर्यकांत त्रिपाठी निराला–** तुलसीदास, अनामिका, कुकुरमुत्ता, बेला, गीतिका, नए पत्ते, परिमल
- **रहीम–** रहीम सतसई, रहीम रत्नावली, रासपंचाध्याई









चंद्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति जी का शैक्षिक योगदान

अनुभूति सुख आधार पर वे,

जा रही सर्वस्य हारे।

प्राण प्यारे हैं नहीं पर है,

उन्हें प्रिया प्राण प्यारे।

ISBN 978-93-5592-300-4

9 789355 923004